SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

पारिजात

अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका

अंकः 63वां

वर्षः 2025

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर-273012

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2025 का आयोजन

विश्वभर में स्वास्थ्य, मानसिक शांति एवं आध्यात्मिक संतुलन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाता है। इसी क्रम में, हमारे संस्थान के मनोरंजन क्लब में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस, 2025 का सफल आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत प्रभातकाल में हुई, जिसमें अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रतिभागियों को विभिन्न योगासन, प्राणायाम तथा ध्यान तकनीकों का अभ्यास कराया गया। योग सत्र में शरीर को लचीला व सशक्त बनाने वाले आसनों के साथ-साथ मानसिक तनाव को कम करने वाली ध्यान विधियों पर भी विशेष ध्यान दिया गया। कार्यक्रम का समापन संकल्प के साथ किया गया कि सभी सहभागी प्रतिदिन योगाभ्यास कर स्वयं को स्वस्थ एवं सकारात्मक बनाए रखेंगे।

भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग

पारिजात

अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका

अंकः 63वाँ

प्रकाशक एवं स्वामित्वाधिकार

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा

पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर-273012

इस पत्रिका में व्यक्त विचार, रचनाकारों के निजी विचार है व प्रकाशित रचना में प्रस्तुत तथ्य, आंकड़े व व्याख्या को प्रमाणिकता के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी है। प्रकाशित रचना से संपादक मंडल / प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नही।

पारिजात-परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री अभिषेक सिंह

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा

संरक्षक

श्री विकास आहूजा

उप निदेशक

संपादक

श्री अशोक कुमार

सहायक निदेशक (राजभाषा)

संकलनकर्ता

श्रीमती बबिता मणि, कनिष्ठ अनुवादक

श्री इम्तियाज अहमद, कनिष्ठ अनुवादक

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचनाएँ / लेख	रचनाकारों / लेखकों के नाम एवं पदनाम (श्री / श्रीमती / सुश्री)	पृ.सं.
1.	धातु एक रोग अनेक	राजेश कुमार पाण्डेय, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	9
2.	राजभाषा हिंदी की संवैधानिक यात्रा	आलोक पाण्डेय, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	11
3.	प्राकृतिक आपदाएँ: कारण, प्रभाव एवं बचाव के उपाय	अमन कुमार मिश्रा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	12
4.	राजभाषा हिंदी की संवैधानिक यात्रा	जनार्दन मिश्र, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	13
5.	कोविड-19 का बच्चों पर प्रभाव	संदीप कुमार पाठक, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	14
6.	मानव जीवन में शिक्षा, संस्कार और जीवन मूल्य	बबिता मणि, कनिष्ठ अनुवादक	21
7.	डिजिटल अरेस्ट	इम्तियाज अहमद, कनिष्ठ अनुवादक	25
8.	किंकर्तव्यविमूढ़	संतोष कुमार श्रीवास्तव, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	29
9.	लोभवृत्ति-रामचरितमानस की दृष्टि में	प्रशांत शुक्ला, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	30
10.	विषयः भाषा की भूमिका	हर्षिता दूबे, पत्नी श्री संदीप कुमार पाठक, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	34
11.	मेरी कुंभ यात्रा	मीना रानी, लेखापरीक्षक	37
12.	पेयजल की समस्या	एम. रहमान खान, डाटा इंट्री ऑपरेटर (बी.)	38
13.	मोबाइल फोन के हानिकारक प्रभावः स्वास्थ जोखिम उजागर	समा खातून, पत्नी श्री एम. रहमान खान, डाटा इंट्री ऑपरेटर (बी.)	42
14	परिवेश	राम शबद लाल, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	47
15.	मेरी मेघालय यात्रा	अंशुमान शर्मा, पुत्र श्री अशोक कुमार, सहायक निदेशक (राजभाषा)	48
16.	आधुनिक जीवनशैली	जनार्दन मिश्र, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	50
17.	धर्म और जाति	अनुश्री विश्वकर्मा, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	51
18.	कई बार शुरूआत नई की है।	डॉ. प्रदीप अग्रवाल, लेखापरीक्षक	53
19.	मछली की व्यथा	डॉ. प्रदीप अग्रवाल, लेखापरीक्षक	55
20.	समय	डॉ. संध्या सिंघल, पत्नी श्री समीर कुमार सिंघल, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	56
21.	राजभाषा स्वर्ण जयंती समारोह-2025	अशोक कुमार, सहायक निदेशक (राजभाषा)	57
22.	अहमियत	हरि गोविंद, एम.टी.एस.	59

प्रधान निदेशक की कलम से...

कार्यालय की अर्धवार्षिक हिंदी ई-पत्रिका 'पारिजात' के 63वें अंक का सफलतापूर्वक प्रकाशन हमारे लिए अत्यंत ही गर्व का विषय है। पत्रिका का यह नवीनतम अंक कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का राजभाषा हिंदी के प्रति अतीव लगाव को प्रदर्शित करता है। कार्यालयी काम-काज को अधिक से अधिक राजभाषा हिंदी में करना, हमारा संवैधानिक दायित्व है तथा यह पत्रिका इस दिशा में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

भाषा मानवीय सभ्यता, संस्कृति और सामाजिकता का मूलाधार है। भाषा की सरलता, सहजता तथा शालीनता, अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान करती है। इस पत्रिका ने इन पहलुओं को भव्यता से समाहित किया है। हिंदी हमेशा से ही पूरे देश को एकता के सूत्र में पिरोने का काम करती आयी है एवं इस महत्वपूर्ण कार्य में 'पारिजात' पत्रिका भी महत्वपूर्ण योगदान दे रही है।

भारत की प्रत्येक भाषा अपना एक अलग स्थान रखती है। उनमें से हिंदी आजादी के बाद से संघ की राजभाषा रही है। इसी क्रम में राजभाषा हिंदी की इस प्रगति में इस कार्यालय की 'पारिजात' पत्रिका भी एक अहम स्थान रखती है।

अंत में, मैं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य एवं उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करते हुए पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं / लेखों के रचनाकारों एवं लेखकों तथा संपादक मंडल को पत्रिका के सफल संपादन के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।

अभिषेक सिंह
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा

उप निदेशक की कलम से...

कार्यालय की राजभाषा हिंदी पत्रिका 'पारिजात के 63वें' अंक के प्रकाशन हेतु आप सभी को बहुत-बहुत शुभकामनाएँ। अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रही हमारी राजभाषा हिंदी को आगे ले जाना हम सभी का नैतिक दायित्व है। राजभाषा हिंदी को और अधिक मजबूत बनाने में 'पारिजात' पत्रिका एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। राजभाषा हिंदी का कार्यालयों में अधिक से अधिक प्रयोग हो इसके लिए हमारी सरकार भी अथक प्रयास कर रही है। केंद्र सरकार के कार्यालयों से प्रकाशित होने वाली हिंदी पत्रिकाएँ इसका सबसे बड़ा प्रमाण भी है।

हमारे कार्यालय की पत्रिका 'पारिजात' केंद्र सरकार के इस पहल में अत्यंत ही महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी भाषा के प्रति अत्यंत ही गहरा लगाव है। यह उनकी राज्यभाषा के साथ-साथ मातृभाषा भी है इसीलिए इनकी रचनात्मकता को इस पत्रिका के माध्यम से कलमबद्ध किया गया है।

मैं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य एवं उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करते हुए पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं / लेखों के रचनाकारों एवं लेखकों तथा संपादक मंडल को पत्रिका के सफल संपादन के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

विकास आहूजा
उप निदेशक

संपादक की कलम से...

कार्यालयीन अर्धवार्षिक हिंदी ई-पत्रिका 'पारिजात' का 63वां अंक आपके कर कमलों में सौंपते हुए मुझे लोमहर्षक की अनुभूति हो रही है। उच्चाधिकारियों के सम्यक दिशा-निर्देश, राजभाषा विषयक व कार्यालयीन लेखों की राजभाषा कार्यान्वयन हेतु उपादेयता, विविध समसामयिक, साहित्यक विधाओं में लालित्यपूर्ण तथा प्रेरक रचनाओं के रचनाकारों के यथेष्ट सहयोग के फलस्वरूप पत्रिका का स्तर उत्कृष्ट हुआ है।

भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पुरातन सभ्यता और भाषिक विविधता के लिए दुनियाँ में विशिष्ट स्थान रखता है। आज हिंदी विश्व पटल पर अपनी महत्ता का परिचय दे रही है। यह पत्रिका चंपू है जिसमें विभिन्न प्रकार के गद्य व पद्य का संकलन किया गया है।

आप सभी से अनुरोध है कि इस अर्धवार्षिक 'पारिजात' पत्रिका की प्राप्ति के उपरांत पत्रिका के प्रति अपने बहुमूल्य सुझावों से हमें अवश्य अवगत कराएँ ताकि पत्रिका के आगामी अंकों को और अधिक बेहतर बनाने में हमें मार्गदर्शन मिल सके। आप सभी के बहुमूल्य सुझावों एवं मार्गदर्शन की प्रतीक्षा है।

अंत में, मैं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य एवं उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करते हुए पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं एवं लेखों के रचनाकारों और लेखकों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

अशोक कुमार
सहायक निदेशक (राजभाषा)

धातु एक रोग अनेक

राजेश कुमार पाण्डेय,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

भोजन बनाने या रखने की यदि सबसे खराब कोई धातु है तो वह एल्युमिनियम है। हमारे घरों में मुख्य रूप से भोजन में चावल, दाल, सब्जी एवं रोटी ही बनती है। जहाँ तक हमने देखा और पाया है कि अधिकतर घरों में दाल एवं चावल प्रेशर कुकर में बनता है तथा सब्जी कढ़ाई में बनती है। यदि हम देखें तो पाएंगे कि ये दोनों बर्तन एल्युमिनियम के ही प्रयोग में लाए जाते हैं। रिसर्च में पाया गया है कि एल्युमिनियम के बर्तनों में लगातार भोजन करने पर हमें अर्थराइटिस, अस्थमा, ब्रांकॉइटिस, शुगर एवं ब्लड प्रेशर होने की संभावना रहती है।

भारत में एल्युमिनियम का उपयोग बहुत पुराना नहीं है। अंग्रेजी सरकार का पहला नोटिफिकेशन जो एल्युमिनियम के बर्तनों के उपयोग का था, वह यह था एल्युमिनियम के बर्तनों का उपयोग जेल में बंद कैदियों को भोजन देने के लिए किया जाए, क्योंकि उस समय ज्यादातर स्वतंत्रता संग्राम सेनानी ही जेलों में बंद थे तथा अंग्रेजी सरकार का उद्देश्य था कि या तो इन्हें मार दिया जाए या अगर यह जिंदा रहे तो इस तरीके से जिंदा रहें कि यह किसी भी तरह काम करने के लायक न बचें।

सरदार भगत सिंह हों, अशफाक उल्ला खान हों या फिर रोशन सिंह सभी क्रांतिकारी ही उस समय जेलों में आते-जाते रहते थे। अंग्रेजी सरकार का उद्देश्य था कि इन्हें शारीरिक रूप से कमजोर किया जाए। इस कारण से ही जानबूझकर पूरी समझदारी के साथ एल्युमिनियम के बर्तनों का उपयोग जेलों में बंद कैदियों को भोजन दिए जाने के लिए किया जाने लगा। परिणाम यह हुआ कि धीरे-धीरे अंग्रेज तो इस देश से चले गए परंतु भारत की जेल में आज भी एल्युमिनियम के बर्तनों में ही कैदियों को खाना दिया जाता है। उससे भी अधिक दुर्भाग्य की बात यह है कि धीरे-धीरे यह एल्युमिनियम जेलों से अब हमारे घरों में आ गया।

आप लोग देखे होंगे और यह मेंरा व्यक्तिगत अनुभव है कि यदि एल्युमिनियम के प्रेशर कुकर में चावल बनाया जाए और उसे सुबह बनाकार शाम तक छोड़ दिया जाए तो आप देखेगें जहां चावल समाप्त होता है बार्डर पर हरे रंग की हल्की सी लेयर एल्युमिनियम के पात्र के किनारे यानि प्रेशर कुकर की दिवार पर दिखती है। यह और कुछ नहीं एल्युमिनियम का ही अंश है जो भोजन के रूप में हमारे पेट में जाता है और अंदर जाकर एल्युमिनियम की अधिकता करके तमाम बिमारियों को प्रेरित करने का कार्य करता है।

इसी प्रकार वर्तमान में नॉन स्टिक के बर्तनों का प्रयोग बहुत बढ़ गया है। नॉन स्टिक के बर्तनों में टेफलॉन की कोटिंग की जाती है। टेफलॉन का केमिकल नाम पालिटेट्रा फ्लोरोएथिलीन है। पालिटेट्रा फ्लोरोएथिलीन में पर-फ्लोरोऑक्टोनोईक एसिड मिला होता है, जो कि कैंसर का एक कारण है। सरकार के निर्देश के क्रम में बर्तनों पर 20 माइक्रॉन की मोटाई के बराबर टेफलॉन की कोटिंग

की जाती है। इसे आप ऐसे समझ सकते हैं कि 1000 माइक्रॉन लगभग 1 मिली मीटर के बराबर होता है।

यदि इन बर्तनों में भोजन पकाने पर टेफलॉन की कोटिंग भोजन में छुटती है। वर्तमान में सरकार द्वारा पर-फ्लोरोऑक्टोनोईक एसिड (PFOA) उपयोग पर रोक लगा दी गई है। इसीलिए वर्तमान में नॉन स्टिक बर्तन बनाने वाली कंपनियों द्वारा Free from PFOA का नारा दिया जा रहा है।

अतः आवश्यकता है कि हम अपने घरों से एल्युमिनियम के बर्तनों का उपयोग बंद करें। बाजार में स्टील के भी प्रेशर कुकर्स आ गए हैं उनका उपयोग करें तथा सब्जी बनाने हेतु लोहे की कढ़ाई का ही उपयोग करें, जिससे हम एल्युमिनियम से होने वाली हानियों से बच सकें।

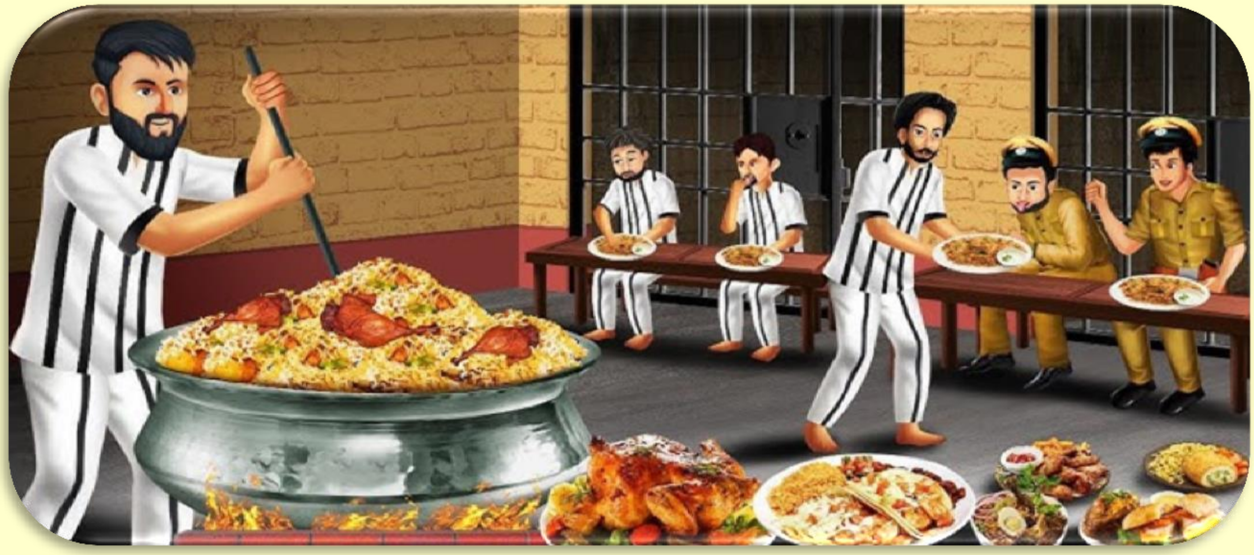

*****

राजभाषा हिंदी की संवैधानिक यात्रा

आलोक पाण्डेय,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

हमारे देश का संविधान 2 वर्ष, 11 माह तथा 18 दिन की अवधि में निर्मित हुआ तथा 26 जनवरी, 1950 को लागू हुआ था। स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व देश में स्वतंत्रता आंदोलन के साथ-साथ हिंदी को देश की राष्ट्रभाषा बनाए जाने की सर्वाधिक मांग की जा रही थी। संविधान निर्माताओं ने हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाए जाने की मांग को दृष्टिगत रखते हुए संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा स्वीकार करते हुए राजभाषा हिंदी के संबंध में प्रावधान किए।

संविधान के भाग 5 एवं 6 के क्रमशः अनुच्छेद 120 तथा 210 में तथा भाग 17 के अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा हिंदी के संबंध में प्रावधान किए गए हैं। इन प्रावधानों के साथ ही संप्रति भारत की 22 भाषाओं को संविधान की अनुसूची 8 में मान्यता दी गई है। ये भाषाएँ इस प्रकार हैः- हिंदी, पंजाबी, उर्दू, कश्मीरी, संस्कृत, असमिया, ओड़िया, बांग्ला, गुजराती, मराठी, सिंधी, तमिल, तेलुगू, मलयालम, कन्नड़, मणिपुरी, कोंकड़ी, नेपाली, संथाली, मैथिली, बोडो, डोंगरी।

संघ की राजभाषाः (अनुच्छेद 343) संविधान के भाग 17 के अनुच्छेद 343 में संघ की राजभाषा हिंदी तथा लिपि देवनागरी होगी, यह वर्णित है।

अनुच्छेद 344- राजभाषा आयोग का गठनः- अनुच्छेद 344 में राजभाषा आयोग के गठन के संबंध में निर्देश दिए गए हैं। प्रथम राजभाषा आयोग का गठन वर्ष 1955 में हुआ था तथा इसके अध्यक्ष श्री बी.जी. खेर थे। (बाला साहब गंगाधर खेर)

अनुच्छेद 345- राज्यों की राजभाषाएः- अनुच्छेद 345 में राज्यों की राजभाषाओं के संबंध में दिशानिर्देश दिए गए हैं।

अनुच्छेद 346- संघ और राज्यों के बीच संचार की भाषाः- अनुच्छेद 346 में संघ और राज्यों के मध्य संचार की भाषा के संबंध में निर्देश दिए गए हैं।

अनुच्छेद 347- राज्यों में द्वितीय राजभाषाः- अनुच्छेद 347 में राज्यों में द्वितीय राजभाषा के संबंध में उल्लेख किया गया है।

अनुच्छेद 348- उच्चतम न्यायालय/उच्च न्यायालय में प्रयोग की जाने वाली भाषाः- इस अनुच्छेद में उच्चतम न्यायालय/उच्च न्यायालय में प्रयोग की जाने वाली भाषा के संबंध में निर्देशित किया गया है।

अनुच्छेद 349- भाषा से संबंधित कुछ विधियाँ अधिनियमित करना।

अनुच्छेद 350- व्यथा निवारण के लिए संघ की राजभाषा।

अनुच्छेद 351- हिंदी के विकास के लिए निर्देश।

*****

प्राकृतिक आपदाएँ: कारण, प्रभाव एवं बचाव के उपाय

अमन कुमार मिश्रा,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

प्रकृति अपने आप में अत्यंत शक्तिशाली एवं रहस्यमयी है। जब यह संतुलन में रहती है, तब जीवन सुचारू रूप से चलता है लेकिन जब इसका संतुलन बिगड़ता है तो प्राकृतिक आपदाओं के रूप में यह भयंकर रूप धारण कर लेती है। भूकंप, बाढ़, सूखा, तूफान, चक्रवात, ज्वालामुखी, भूस्खलन आदि प्राकृतिक आपदाओं के प्रमुख रूप हैं।

कारणः- प्राकृतिक आपदाओं के कारण प्राकृतिक एवं मानवजनित दोनों हो सकते हैं। भूकंप और ज्वालामुखी जैसी घटनाएँ पृथ्वी की आंतरिक क्रियाओं के कारण होती है। वहीं बाढ़, सूखा एवं तूफानों के पीछे जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई, अंधाधुंध शहरीकरण, नदियों का अतिक्रमण आदि मानव जनित कारण भी हैं। ग्लोबल वार्मिंग ने इन आपदाओं की आवृत्ति एवं तीव्रता दोनों में वृद्धि की है।

प्रभावः- प्राकृतिक आपदाओं के दुष्परिणाम अत्यंत भयावह होते हैं जैसे जान-माल की हानि, फसलें नष्ट होना, आर्थिक नुकसान, पेयजल की कमी, महामारी फैलना और जनसंख्या विस्थापन जैसे कई गंभीर प्रभाव देखने को मिलते हैं। इसके अलावा मानसिक तनाव और सामाजिक अस्थिरता भी इन आपदाओं का प्रमुख कारण हो सकता है।

बचाव के उपायः- प्राकृतिक आपदाओं से पूरी तरह बचा नहीं जा सकता, लेकिन इसके प्रभाव को निम्नलिखित उपायों की सहायता से कम किया जा सकता हैः

- आपदापूर्व चेतावनी प्रणाली को सुदृढ़ करना।
- नदियों और जलाशयों की उचित देख-रेख।
- भूकंपरोधी भवन निर्माण।
- आम जन को आपदा प्रबंधन के प्रति शिक्षित और जागरूक करना।
- सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थाओं के बीच समन्वय।

निष्कर्षः- प्राकृतिक आपदाएँ मनुष्य के लिए एक चेतावनी है कि वह प्रकृति के साथ छेड़-छाड़ बंद करे और सतत विकास की दिशा में कार्य करे। यदि हम समय रहते सचेत हो जाएँ और उपयुक्त कदम उठाएँ, तो हम इन आपदाओं से होने वाली क्षति को काफी हद तक कम कर सकते हैं

*****

राजभाषा हिंदी की संवैधानिक यात्रा

जनार्दन मिश्र,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

हिंदी का आम जनमानस की भाषा से राष्ट्रभाषा घोषित किए जाने तक का सफर संविधान से होकर गुजरता है। जहाँ संविधान ने विधिक रूप से संबल प्रदान करके हिंदी भाषा को भविष्य की आने वाली पीढ़ियों के लिए मार्ग प्रशस्त किए जाने का कार्य किया, जिससे न केवल वे हिंदी के महत्व को समझे, बल्कि हिंदी को आत्मिक रूप से अपनाकर दूसरों को भी प्रेरित कर सकें। यही राजभाषा के रूप में दर्ज होने की प्रक्रिया ही 'राजभाषा संवैधानिक यात्रा' है।

भारत जैसे विविधतापूर्ण देश जहाँ हर कदम पर अनेक क्षेत्रीय भाषाएँ, बोलियाँ और संस्कृतियाँ अस्तित्व में हैं वहाँ राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने के लिए हिंदी को राजभाषा के रूप में अधिष्ठापित करना इस देश की प्राथमिकता थी। अंग्रेजी हुकूमत में जहाँ अंग्रेजी प्रशासनिक और उच्च भाषा के माध्यम का केंद्र बनी रही वहाँ इसे राष्ट्रभाषा बनाने यानि कि जन-जन की भाषा बनाने का कार्य महात्मा गाँधी जैसे राष्ट्र नेताओं ने किया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात गंभीर विचार-विमर्श एवं बहस के पश्चात समझौते में तय किया गया कि हिंदी (देवनागरी लिपि) इस देश की राजभाषा होगी परंतु अंग्रेजी का उपयोग भी अगले 15 वर्षों तक जारी रहेगा। हिंदी की राजभाषा के रूप में संवैधानिक यात्रा के सफर में संविधान के अनुच्छेद 343, 351 एवं विभिन्न राजभाषा अधिनियम, 1963 अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

संविधान का अनुच्छेद 343 हिंदी को राजभाषा के रूप में अधिष्ठापित करता है और यह उपबंध करता है कि अंग्रेजी अगले 15 वर्षों तक उपयोग में ली जाती रहेगी। इस आशय के साथ संविधान के अनुच्छेद 351 में हिंदी को राष्ट्रभाषा यानि राजभाषा के रूप में अपनाने के साथ हिंदी के विकास के लिए सरकार द्वारा उचित कदम उठाए जाने हेतु प्रयास करने से संबंधित उपबंध किए गए है।

इसके बाद भी सरकार द्वारा भी विभिन्न अधिनियमों के माध्यम से राजभाषा को केंद्रीय कार्यालयों में उपयोग किए जाने के लिए समय-समय पर कार्यशालाएँ आयोजित किए जाने जैसे प्रोत्साहन कार्य हिंदी को राजभाषा के रूप में पुष्ट करते हैं। यानि हिंदी सरकार की प्रमुख कार्य भाषा है। जहाँ सरकार द्वारा जारी की जाने वाली विभिन्न योजनाएँ एवं अन्य प्रलेखों में हिंदी का उपयोग किया जाना ही हिंदी की सफल संवैधानिक यात्रा का प्रतीक है।

राजभाषा हिंदी की संवैधानिक यात्रा भाषायी विविधता, लोकतांत्रिक भावना एवं राजनीतिक समझौते का अद्भुत संगम है। हिंदी देश की आत्मा है और इसके प्रचार-प्रसार में राष्ट्र के नागरिक होने के नाते सहयोग देना हमारा महत्वपूर्ण कर्तव्य है और हमें राजभाषा को संरक्षित करने के लिए आत्मिक रूप से अपनाना चाहिए जिससे यह वैश्विक मंच पर भी अधिष्ठापित हो सके।

*****

कोविड-19 का बच्चों पर प्रभाव

संदीप कुमार पाठक,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

बाल्यावस्था ऐसी अवस्था है जहां जीवन की कठिनाइयों का पता नहीं चल पाता है। बच्चों का बचपन, भोलापन इतना चरम पर होता है, मानो सारा संसार सुंदर ही प्रतीत होता है। बिल्कुल वैसे ही, जब एक बच्ची मां की कोख से जन्म लेकर धरती पर आती है और अपनी करतल ध्वनि से संसार को अपने आने का संकेत देती है, किंतु वह इस बात से अनभिज्ञ है कि संसार में उसके लिए कितनी कठिनाइयां इंतजार कर रही हैं।

ठीक वैसे ही, बचपन में सब कुछ अच्छा ही प्रतीत होता है, चाहे पिता के चेहरे पर मुस्कान हो या मां की मीठी बोली में छिपी दुःख की आहट, बच्चा इन सब से अनभिज्ञ होता है। उसे आभास भी नहीं होता कि पिता की मुस्कान के पीछे कितना परिश्रम है और मां की मीठी बोली के पीछे दुःख की पीड़ा है, जो दोनों माता-पिता होने के नाते अपने बच्चों को बता कर उससे उसका बचपन नहीं छीन सकते।

ठीक उसी तरह एक भयावह महामारी ने धरती पर अवतरण लिया है जिससे बच्चे तो बच्चे, बड़े भी अनजान हैं। इस महामारी का बच्चों के जीवन पर उनके भविष्य पर गहरा असर होगा। बचपन में बाल विकास का होना अनिवार्य है। बालपन से ही मनुष्य जीवन जीने के गुणों को सीखता है और बाल्य विकास की शुरुआत रोज नए-नए क्रियाकलापों से होती है। कभी गलती कर बच्चा स्वयं सीखता है, तो कभी मित्र की गलती को देख, अभिभावक एवं शिक्षक से सवाल कर सीख ग्रहण करता है।

लेकिन कोविड-19 से व्याप्त लॉकडाउन के कारण बच्चों के मित्र समूह का दायरा और विद्यालय में रहकर रोज नया-नया सीखना आदि का अतिक्रमण हुआ है। इस कारण बच्चों के नए-नए क्रियाकलापों को सीखने की सीमा भी कम हुई है। उन्हें अवसर कम प्रदान किए गए ताकि उन्हें संक्रमण होने के खतरे से बचाया जा सके। इसके बावजूद यह भी देखा जा सकता है कि बच्चों ने घर की चाहर-दीवारी में रहकर अपने हुनर को तराशने का काम किया है।

नए-नए हुनर को सीखा है और तो और जो काम बालिकाओं का माना जाता था उस काम को करने में भी बालकों ने दिलचस्पी दिखाई है और इस कारण उनके हृदय में स्त्री विषयों के प्रति संवेदनशीलता का सृजन हुआ है। लड़कों ने भी बढ़-चढ़कर अपनी मां-बहनों का कंधे से कंधा मिलाकर साथ दिया है और अपने अंदर एक नए हुनर का प्रतिपादन किया है।

बालपन के दौरान चरित्र निर्माण का बीज पड़ता है और आत्मविश्वास, आत्मसम्मान, स्नेह, प्रेम व करुणा का बीज भी इसी उम्र में पनपता है ताकि बच्चा यौवनावस्था में जीवन की संजीदगी को समझ सके और अपनी जिंदगी को सही ढंग से जी सके। लेकिन कई मायनों में इस महामारी के कारण लगी किले बंदी के कारण बच्चों को निराशा हाथ लगी है। उनके चरित्र निर्माण में जो भूमिका विद्यालयों, दोस्त, मित्रगण समूह की हो सकती थी वह कहीं अधूरी-सी नजर आती है। जब बच्चे

एक-दूसरे से मिलते हैं तो रचनात्मकता का आदान-प्रदान होता है और रचनात्मक भावनाएं प्रस्फुटित होती हैं। जब वे विद्यालयों में समय बिताते हैं और पल-पल की जिंदगी में निर्णय लेते हैं तो उनके आत्मविश्वास में बढ़ोतरी होती है। दूसरों के साथ समय बिता कर बच्चों में प्रेम, करुणा एवं संवेदनशीलता की भावना का प्रतिपादन होता है। लेकिन इस महामारी से उत्पन्न लॉकडाउन के कारण बच्चों का दायरा सीमित हो गया है। जिस कारण उनके आत्मविश्वास एवं चरित्र निर्माण में कमी देखने को मिल सकती है। सही मायनों में चरित्र निर्माण से ही अच्छे नागरिक का निर्माण होता है और देश का कल्याण संभव है। किंतु अधिक से अधिक समय इस महामारी में बच्चों ने अपने अभिभावकों, बुजुर्गों, एवं अपने भाई-बहनों के साथ बिताया है तो यह कहना गलत नहीं होगा कि अभिभावकों के संरक्षण में उनके आत्मविश्वास को बढ़ाने में, चरित्र-निर्माण करने, करुणा एवं प्रेम की भावना को जगाने में कोई कमी आएगी। हां, यह सत्य है कि अभिभावक, विद्यालयों एवं मित्र समूह की कमी को पूरा नहीं कर सकते और उससे जुड़े अनुभव को भी बच्चों को अनुभव नहीं करवा सकते, लेकिन अपने प्रयास से इसे कम जरूर कर सकते हैं।

विद्यालयों में जाकर मित्र समूह में रहकर बच्चे जागरूकता की ओर अग्रसर होते हैं। रोज तरह-तरह की परिस्थितियों का सामना करते हैं और जीवन के एहसास एवं अनुभव को ग्रहण करते हैं। लेकिन महामारी के कारण इसमें कमी देखने को मिल सकती है। लेकिन घर में रहकर भी वह अपने अभिभावकों, सगे संबंधियों जैसे दादा-दादी एवं नाना-नानी आदि से उनके तरह-तरह के अनुभव सीख सकते हैं। दादा-दादी एवं नाना-नानी कहानियों एवं किस्सों आदि के माध्यम से बच्चों के भीतर एहसास एवं सहानुभूति की भावना को जागृत कर सकते हैं। लेकिन इस महामारी के कारण बच्चा जब असल जिंदगी का सामना करता है तो वह जिस आत्मीय शक्ति का निर्माण अपने हृदय में अनुभव करता है, उससे अनभिज्ञ ही रहेगा। इसको भी नकारा नहीं जा सकता है कि इस महामारी के कारण उत्पन्न आकस्मिक परिस्थितियों से जन्मी तरह-तरह की समस्याओं का सामना कर उसके अंदर एक अलग ही शक्ति एवं विश्वास का निर्माण देखने को मिल सकता है, क्योंकि जो व्यवहारिक ज्ञान है उसे तो सिखाया जा सकता है लेकिन जो आकस्मिक और क्षणभंगुर है उसे सिखाना कठिन है लेकिन लॉकडाउन ने वह भी सिखा दिया है।

विद्यालयों के परिसर से दूरी के साथ-साथ, दोस्तों की टोली, परिचितों के घरों में मिलना-जुलना आदि में कमी तो आई है लेकिन साथ में परिवार के साथ समय बिताने का अधिक से अधिक समय मिला है। कोविड-19 से उत्पन्न लॉकडाउन के कारण परिवार के बीच नजदीकियां और बढ़ी हैं। साथ ही वे माता-पिता जो नौकरी-पेशे वाले हैं, वे भी अपनी वात्सल्य की भावना को अपने बच्चों पर उड़ेल सके हैं।

घरों के भीतर मानवतावादी क्रियाकलापों को देख बच्चों के मनभाव में भी समाज सेवा करने और स्वार्थहीन भावना से जरूरतमंदों की मदद करने की प्रवृत्ति देखी जा सकती है। जो उनको एक अच्छा इंसान बनाने के साथ-साथ एक भावी नागरिक बनने में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है। इस लॉकडाउन से पैदा बच्चों की तीसरी दुनियाँ जो उनके घर व विद्यालय दोनों से जुदा थी, ने जन्म लिया और कोविड-19 के अनुभवों से बच्चों पर सकारात्मक सोच का निर्माण एवं

प्रयोगात्मक क्रियाकलापों का सृजन संभव हो पाया। साथ ही प्रकृति के ज्ञान को अर्जित करने का अवसर मिला जो बच्चे बिना रोक-टोक स्वयं सीख पाये। कहा जाता है आवश्यकता या आपदा में अवसर होता है तो यह अवसर का लाभ बच्चों को भविष्य में मिलेगा।

जब वह हर आकस्मिक परिस्थितियों के लिए तैयार रहेंगे तो आपदा में अवसर की तलाश कर नए कीर्तिमान स्थापित करेंगे। लॉकडाउन ने एक ऐसा मानवतावादी सिद्धांत दिया है जिससे आने वाली पीढ़ियों के साथ-साथ बच्चों में संवेदना, सहानुभूति, प्रेम, स्नेह एवं सहायता की भावना पैदा होगी और एक मनुष्य के रूप में ईश्वर रूपी मनुष्यों की मदद करने की भावना भी जागृत होगी।

कुछ सकारात्मक प्रभाव भी नजर आए हैं।

बाल्य विकास:- नए-नए क्रियाकलापों को सीखना चरित्र निर्माण एवं आत्मविश्वास का प्रतिफलन।

जागरूक बच्चे:- तरह-तरह की अनजानी परिस्थितियों में जीवन जीने का एहसास एवं अनुभव करना। आत्मीय शक्ति का निर्माण करना, ताकि भविष्य की आकस्मिक परिस्थितियों का सामना किया जा सके।

पारिवारिक संबंधियों के साथ समय व्यतीत:- परिवार से नजदीकी प्यार एवं स्नेह को बढ़ावा देना, मानवतावादी क्रियाकलाप एवं स्वार्थहीन भावना से जरूरतमंदों की सेवा करना। विद्यालय एवं घर से अलग तीसरी दुनियाँ का निर्माण जहां कोविड-19 के अनुभव का प्रयोगात्मक इस्तेमाल संभव होगा। प्रकृति से ज्ञान अर्जित करना।

नकारात्मक प्रभाव

शिक्षा पर प्रभाव:- गुणवत्ता में कमी, सामाजिक आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग का शिक्षा से वंचित रह जाना, अपर्याप्त सीखने की क्षमता, ऑनलाइन डिजिटल पहुंच में कमी एवं असमानता, शिक्षा की गुणवत्ता में कमी, उच्च सामाजिक-आर्थिक समूह के बीच अत्यधिक असमानता।

भविष्य को लेकर चिंताएं:- परीक्षा में अत्यधिक विलंब से नए सत्र की शुरुआत, भविष्य को लेकर बेचैनी एवं चिंता।

स्वास्थ्य समस्याएं:- शारीरिक खेल-कूद में कमी, स्वास्थ्य संबंधी विकार की उत्पत्ति, पोषण एवं पोषक तत्वों की कमी, रोग प्रतिरक्षण क्षमता में कमी।

आक्रामक व्यवहार संबंधी समस्याएं:- सामाजिक अलगाव, निराशा एवं विषाद की उत्पत्ति, क्रोध, व्यग्रता एवं व्याकुलता, बेचैनी, उत्तेजना, चिड़चिड़ाहट।

प्रतियोगी क्षेत्र का अभाव:- विद्यालयों से दूरी का बढ़ना, उत्सुकता एवं उत्साह की कमी, प्रतिस्पर्धा का अभाव, सामाजिक अनुभवों से कटाव।

सोशल मीडिया एवं इंटरनेट की लत:- साइबर बुलिंग, शारीरिक शोषण, हानिकारक द्रवों की बुरी लत लगना।

बच्चों के शोषण की बढ़ती घटनाएं:- शिक्षा से वंचित रह जाना, घरेलू हिंसा, बच्चों के साथ दुराचार, बाल मजदूरी।

विकलांग बच्चों पर प्रभाव:- शिक्षा, पोषण एवं स्वास्थ्य सुविधाओं में कमी एवं अनुपलब्धता के कारण मानसिक विकारों का उत्पन्न होना। कुछ मामलों में बच्चों के स्वास्थ्य पर प्रत्यक्ष प्रभाव देखने को मिल सकता है। साथ ही संकट की इस घड़ी में बच्चों को संभाल कर सुरक्षित रखना आवश्यक है। यह एक सार्वभौमिक संकट बन कर उभरा है जिसका कुछ बच्चों पर आजीवन प्रभाव रहेगा। इस महामारी से उत्पन्न प्रभावों का असर असमान रूप से सभी पर पड़ेगा।

आज के वर्तमान परिदृश्य में विश्व का कोई हिस्सा विरला ही अछूता होगा जो कोविड-19 महामारी के प्रकोप से प्रभावित ना हुआ हो। अर्थव्यवस्था से लेकर परिवार की व्यवस्था, आर्थिक प्रभाव से लेकर मानसिक प्रभाव, बुजुर्गों से लेकर बच्चों तक सभी पर इसका असर देखा जा सकता है। लाखों की संख्या में कोविड-19 महामारी का प्रभाव बच्चों के जीवन पर देखा जा सकता है। इसमें भी सबसे अधिक प्रभाव सामाजिक-आर्थिक रूप से निम्न वर्ग के बच्चों पर देखने में आया है। सबसे अधिक प्रभावित गरीब देशों में रहने वाले बच्चे जो आर्थिक-सामाजिक रूप से अभी तक वंचित है अब और अधिक समस्याओं का सामना करेंगे। भविष्य में ही इसका पता चल सकेगा कि आखिरकार, कितना अधिक नुकसान इस कोविड-19 ने बच्चों के जीवन को प्रभावित किया है। शारीरिक कठिनाइयों की तुलना में मनोवैज्ञानिक समस्या अधिक देखने को मिल सकती हैं। बच्चे खेलों से दूर हो गए, अपने मित्रों से नहीं मिल सके, केवल घरों की चहार-दीवारी में कैद होकर अपनी छोटी-सी सुबह से सायं की छोटी सी दुनियाँ में सिमट कर रह गए और उनके लिए यह घातक साबित हो सकता है। साथ ही स्कूलों का बंद होना, बच्चे एक-दूसरे से नहीं मिलते हैं, अपने विचारों का आदान-प्रदान नहीं करते हैं, तो ऐसी स्थिति में इसका असर उनकी मनोस्थिति पर पड़ता है और मनोवैज्ञानिक विकार उत्पन्न होने लग जाते हैं जिसका उनके स्वास्थ्य पर भी गहरा असर पड़ता है।

कुछ ऐसे वर्ग हैं जो समाज में आर्थिक एवं सामाजिक रूप से वंचित हैं। उस वर्ग के बच्चों को और भी समस्याओं का सामना करना पड़ा होगा। शिक्षा का अभाव तो शुरू से था ही लेकिन डिजिटल साक्षरता की खाई से यह अभाव विकराल ही हुआ है। संसाधनों की अनुपलब्धता के कारण अगर समाज का कोई अंग शिक्षा से वंचित रह जाए तो वह शरीर के उस अंग की भांति है, जिस पर शरीर के मालिक ने कभी ध्यान नहीं दिया उसे लगा कि इस अंग के बगैर भी काम चल जाएगा। किन्तु बाद में एहसास हुआ कि सभी अंगो का आपस में तालमेल अनिवार्य है और एक की अपंगता सारे शरीर को अपंग बना सकती है। ठीक वैसे ही समाज सभी लोगों से बनता है और समाज का एक हिस्सा शिक्षा से वंचित रह जाए तो उसका असर सारे समाज पर पड़ता है।

शिक्षा के क्षेत्र में:- बच्चों की स्कूली शिक्षा पर कोविड-19 का प्रभाव साक्षात देखने को मिलता है। उनकी शिक्षा की गुणवत्ता में कमी आई है। साथ ही जिस भाव से बच्चे स्कूल जाते थे, शिक्षक के सामने खड़े होकर अपने ऊहापोह का हल पाते थे और शिक्षक-विद्यार्थी का पारस्परिक विचार विमर्श हुआ करता था वह आज के ऑनलाइन परिदृश्य में संभव नहीं लगता है। ऑनलाइन शिक्षा केवल खानापूर्ति करना भर है न कि व्यवहारिक शिक्षा का वैकल्पिक माध्यम।

इसमें सबसे अधिक कमी पर्याप्त संसाधनों की अनुपलब्धता है जिस कारण बच्चों की क्षमता का विकास संभव नहीं हो पा रहा है। शिक्षा की गुणवत्ता में कमी देखने को मिल रही है और उच्च

सामाजिक-आर्थिक समूह का दबदबा बना रहने का डर भी क़ायम है और अगर यह खाई गहराती चली गयी तो इसे पाटना मुश्किल हो जाएगा और समाज टूटने की कगार पर आ जाएगा।

विद्यालय बंद होने से बच्चों की शिक्षा प्रभावित हुई है, यूनेस्को की मदद से विभिन्न देशों की सरकारें दूरस्थ शिक्षा समाधानों को सक्रिय रूप से बढ़ावा दे रहे हैं। इसके द्वारा डिजिटल माध्यम से शिक्षण सहायता का इस्तेमाल किया जा रहा है, जिसे बच्चों तक पहुंचाने के लिए अलग-अलग माध्यमों का इस्तेमाल किया जा रहा है। बच्चों को शैक्षिक वीडियो में शिक्षा ग्रहण करने का अवसर प्रदान किया जा रहा है ताकि इसका लाभ उन्हें भविष्य में हो सके।

साथ ही स्कूलों के बंद रहने के दौरान अलग-अलग शारीरिक शिक्षा जैसे योग एवं रचनात्मक गतिविधियों को उनके जीवन में शामिल करने का प्रयास भी जारी है। साथ ही उनके लिए नए कौशल तैयार किए जा रहें हैं जिससे शिक्षा के साथ-साथ बच्चे हुनरमंद भी हो रहे हैं।

यूनिसेफ, विश्व स्वास्थ्य संगठन और अन्य स्वास्थ्य क्षेत्र से जुड़े विशेषज्ञों ने सलाह दी है कि सभी अभिभावक अपने बच्चों का इस महामारी में ख्याल रखें। साथ ही उन से चर्चा करते रहे, उनकी मदद करते रहें, और उनके भीतर संवेदना की भावना को भी बनाए रखने में उनकी मदद करें और उन्हें अपनी सुरक्षा के साथ-साथ दूसरों की मदद करने की भी प्रेरणा प्रदान करते रहे। इस महामारी से बच्चों को अपने माता-पिता अभिभावकों के साथ समय बिताने का अवसर मिला है और उनके साथ घनिष्ठ संबंध भी विकसित करने का मौका मिला है और घनिष्ठ संबंध विकसित होने के साथ-साथ अभिभावक भी इस महामारी के प्रभाव से बच्चों को अवगत कराने में उनकी मदद करेंगे।

साथ ही उनके भीतर मानवता और सहानुभूति विकसित करने में मदद मिल सकती है इससे बच्चों के भीतर मानव जीवन के मूल्य प्रतिपादित करने में मदद मिलेगी और अभिभावक-बच्चे का संबंध प्रगाढ़ होगा और जीवन मूल्य में सहानुभूति की भावना का विकास होगा जो उन्हें एक सच्चा इंसान बनाने में मदद करेगा।

प्रकृति प्रेम एवं प्राकृतिक मूल्यों को ग्रहण करना:- इस कोविड-19 काल में प्रदूषण में कमी आने के कारण प्रकृति की सुंदरता देखने को मिल रही है। पक्षियों की कलरव ध्वनि का एहसास हो रहा है। धरती कितनी सुंदर है इसका अनुभव मिल रहा है। साथ ही प्रकृति की वास्तविक सुंदरता का प्रमाण मिल रहा है। मनुष्यों ने प्रकृति को कितना सताया है यह भी पता चल रहा है। हमारे प्राकृतिक वातावरण में आए बदलाव से बच्चों को वन्य जीवन को देखने, महसूस करने और प्रकृति प्रेम में जीने का अवसर प्रदान किया है। इस कोविड काल में बच्चों ने अनुभव किया कि प्रकृति के नजदीक रहना कितना सुखदाई है और स्वस्थ हवा में सांस लेना कितना लाभप्रद है। बच्चों के अंतर्मन में प्रकृति की सेवा करने की भावना का विकास समाज को लाभ पहुंचा सकता है।

कोविड का असर परिवारों को गरीबी की ओर धकेलना:- कोविड-19 में परिवारों ने अपनी आय के स्त्रोत खो दिए हैं और वैश्विक अर्थव्यवस्था मंदी की चपेट में आ चुकी है। अधिकाधिक परिवार गरीबी के संकट से जूझ रहे हैं। उन परिवारों की स्थिति और भी विकट है जहां शुरू से ही सामाजिक सुरक्षा अनुपलब्ध थी। नवंबर- 2020 तक के अनुमानों के अनुसार यूनेस्को महामारी के कारण वैश्विक, सामाजिक एवं आर्थिक संकट विकासशील देशों में 182 मिलियन अधिक बच्चों को गरीबी

में धकेल चुका है। वैश्विक स्तर पर गरीब परिवारों में रहने वाले बच्चों की कुल संख्या 725 मिलियन से अधिक पहुंच सकती है। इनमें से दो-तिहाई बच्चे उप-सहारा अफ्रीका और दक्षिण एशिया में रहते हैं।

बच्चे, वयस्कों की तुलना में अलग तरह से गरीबी का अनुभव करते हैं इसलिए उनकी भौतिक एवं शारीरिक कमियों और संभावित अभावों का आकलन करना और उनकी गरीबी को केवल आर्थिक आय के माध्यम से नहीं बल्कि बहु आयामी रूप से मापना भी महत्वपूर्ण है।

सेव द चिल्ड्रन और यूनिसेफ द्वारा संयुक्त रूप से किए गए विश्लेषण के अनुसार लगभग 150 मिलियन से अधिक बच्चे शिक्षा, स्वास्थ्य, देखभाल, आवास, पोषण, स्वच्छता या पानी की पहुंच के बगैर ही कोविड-19 महामारी के कारण बहुआयामी गरीबी में रह रहे हैं। कोविड से पहले भी बच्चे तरह-तरह की समस्याओं से जूझ रहे थे किन्तु कोविड-19 महामारी ने उस समस्या को विकराल कर दिया और प्रभाव को और अधिक गहरा कर दिया। यह तस्वीर बहुत दयनीय है लेकिन बहुआयामी गरीबी में रहने वाले बच्चों की स्थिति तब तक खराब होने की संभावना है जब तक कि राष्ट्रीय सरकारें और अंतरराष्ट्रीय समुदाय इस झटके को कम करने के लिए कदम नहीं उठाते।

स्वास्थ्य क्षेत्र के विशेषज्ञों के अनुसार बच्चों पर कोविड-19 का प्रभाव सबसे कम देखने को मिला है। परंतु मानसिक रूप से मनो-सामाजिक प्रभाव ने सबसे अधिक बच्चों के वर्ग को ही प्रभावित किया है। घरों एवं संस्थानों में क्वारंटाइन रहने के कारण बच्चों की शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक दशा को देखा जा सकता है। उनकी शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक दशाएं खराब हुई है। साथ ही स्कूलों का बंद रहना बाहरी गतिविधियों में कमी असंतुलित आहार और नींद की आदतों के असंतुलन से बच्चों की सामान्य जीवन शैली को बाधित करने का कार्य किया है। संकट का भविष्य की भावना, अधीरता, झुंझलाहट और विभिन्न न्यूरोसाइकाइट्रिक मनोदशा प्रभावित हुई है। घरेलू हिंसा, बाल शोषण, मिलावटी ऑनलाइन सामग्री की घटनाओं का उनके स्वास्थ्य एवं निकट भविष्य पर अत्यधिक दुष्प्रभाव पड़ रहा है।

सिंगल पैरंट और फ्रंट लाइन वर्कर्स के बच्चों को अनोखी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। हासिए पर रह रहे समुदायों के बच्चों पर विशेष रूप से इस संक्रमण का अतिसंवेदनशील प्रभाव देखने को मिला है।साथ ही इस महामारी के विस्तार से निकट भविष्य में अन्य दुष्परिणामों का सामना करना पड़ सकता है जैसे- बाल श्रम में वृद्धि देखने को मिल सकती है, बाल तस्करी के अत्यधिक मामले देखने को मिल सकते हैं,बाल विवाह के मामलों में तेजी आ सकती है। यौन शोषण और उसके कारण मृत्यु की संख्या में भी बढ़ोतरी हो सकती है, यह सारी घटनाएं सामान्य घटनाएं हैं जो निकट भविष्य में देखी जा सकती हैं। बच्चों एवं किशोरों पर कोविड-19 के मनोसामाजिक दुष्प्रभावों को कम करने के लिए माता-पिता, बाल रोग विशेषज्ञ, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक कार्यकर्ता, अस्पताल प्राधिकरण, सरकारी एवं गैर-सरकारी संगठनों की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। समाज के विभिन्न वर्गों के बच्चों के मध्य बुनियादी सुविधाएं, सामाजिक सुरक्षा, चिकित्सा देखभाल और शैक्षिक असमानताओं को कम करना सर्वोच्च प्राथमिकताओं में से एक है।

COVID-19 महामारी का दुनिया भर के बच्चों पर दूरगामी, दीर्घकालिक प्रभाव पड़ेगा। हालांकि कुछ प्रभाव सकारात्मक हो सकते हैं किंतु नकारात्मक प्रभाव विनाशकारी होंगे और लाखों बच्चों को किसी न किसी रूप में प्रभावित कर सकते हैं। साथ ही इनका असर उनके सम्पूर्ण जीवन पर देखने को मिलेगा। COVID-19 के बाद के युग में बच्चों पर महामारी के प्रभाव को कम करने में अंतर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य संगठन, बच्चों के कल्याणकारी संगठनों और सरकारों को मिलकर काम करने की आवश्यकता है।

*****

मानव जीवन में शिक्षा, संस्कार और जीवन मूल्य

बबिता मणि,
कनिष्ठ अनुवादक

इस धरा पर अगर सबसे बुद्धिजीवी कोई जीव ईश्वर ने बनाया है तो वो है मनुष्य। वैसे तो ईश्वर ने इस धरती पर अनेक प्रकार के जीवों का निर्माण किया है लेकिन मनुष्य ही एक ऐसा जीव है इस धरती पर जो अन्य सभी जीवों से बिल्कुल अलग गुण लेकर जन्म लिया है। ईश्वर से प्राप्त इन विशेष गुणों को मनुष्य अपने जीवन में कैसे सदुपयोग करता है ये अब उसके हाथ में है। अब बात आती है संस्कार की। संस्कार किसे कहते हैं और मनुष्य को ये कहाँ से मिलती है? किसी भी व्यक्ति के जीवन में संस्कारों का एक अभिन्न स्थान है क्योंकि मनुष्य के जीवन में संस्कार उसके शरीर और आत्मा को अंलकृत करने का काम करते हैं। या यूं कहें कि जिस क्रिया से मन, वाणी उत्तम हो उसे संस्कार कहते हैं। पहले से विद्यमान अनैतिक दुर्गुणों को हटाकर उनकी जगह नैतिक सद्गुणों को आत्मसात करने को संस्कार कहते हैं। ये संस्कार मनुष्य को उसके परिवार से, आस-पड़ोस से, समाज से एवं विद्यालय आदि से प्राप्त होते हैं।

हमारे समाज में परिवार को प्रथम पाठशाला एवं माता-पिता को प्रथम गुरू का स्थान दिया गया है। घर का माहौल जैसा होता है या परिवार में रहने वाले सदस्य जिस प्रकार का व्यवहार एक-दूसरे के साथ करते हैं वो किसी भी व्यक्ति के लिए प्रथम सीख होती है। माता-पिता जो शिक्षा या संस्कार अपने बच्चे को देते हैं बच्चा बड़ा होकर उन्हीं का अनुकरण करता है। इसीलिए तो कहा जाता है कि किसी भी व्यक्ति के स्वभाव से या उसकी रहन-सहन की शैली से उसके घर-परिवार के संस्कारों का पता आसानी से लगाया जा सकता है।

उसके बाद स्थान आता है विद्यालय और शिक्षक का। विद्यालय एक ऐसा स्थान है जो किसी भी व्यक्ति के जीवन को पूर्णतः बदलने का सामर्थ्य रखता है। शिक्षक अपनी पूरी कोशिश करता है किसी भी बच्चे को अनुशासित व्यक्ति बनाने में। इसीलिए शिक्षक को कुम्भार एवं बच्चे को मिट्टी का घड़ा कहा जाता है। शिक्षक उस मिट्टी के घड़े को अपने ज्ञान के प्रभाव से सुव्यस्थित कर देता है। जिससे बच्चा बड़ा होकर अपने जीवन में तरक्की करता है।

फिर आता है समाज का स्थान। व्यक्ति के आस-पड़ोस का परिवेश जैसा होता है उसका भी उसके जीवन में बहुत ही गहरा प्रभाव पड़ता है। वो कहा जाता है न कि व्यक्ति जिस प्रकार के सामाजिक परिवेश में उठता-बैठता है या अपना अधिकांश समय व्यतीत करता है, उसका असर उसके जीवन में दिखने लगता है। इसीलिए कहा जाता है किसी की भी संगति सोच-विचारकर करनी चाहिए क्योंकि हम जैसे समाज में रहते हैं, धीरे-धीरे वैसे समाज के रहन-सहन, जीवन-शैली आदि का प्रभाव व्यक्ति के ऊपर पड़ने लगता है।

घर-परिवार, माता-पिता, शिक्षक एवं समाज से मिले संस्कार हमारे जीवन के मूल्य एक अलग ही ऊँचाई पर पहुँचा देते हैं। अब बात आती है कि क्या केवल संस्कारी होने सेही व्यक्ति के

जीवन का मूल्य बड़ सकता है, नहीं, बिल्कुल नहीं। व्यक्ति को संस्कारिक होने के साथ-साथ शिक्षित होना भी अनिवार्य है क्योंकि सही शिक्षा व्यक्ति को संस्कारों के महत्व को समझाती है। अगर कोई व्यक्ति केवल शिक्षित हो और उसके अंदर संस्कारों की कमी हो तो भी उसका पतन होना संभव है क्योंकि कोई भी व्यक्ति चाहे कितना भी शिक्षित हो यदि उसके अंदर संस्कारों की कमी है तो फिर उसकी शिक्षा को महज एक कागज के टुकड़े की तरह समझा जाता है। शिक्षा व्यक्ति को ज्ञानवान तो बना सकती है किंतु उस शिक्षा का उपयोग जीवन में कैसे करना है इसको पूर्ण करने का कार्य संस्कारों के माध्यम से ही हो पाता है। मनुष्य के जीवन का मूल्य उचित शिक्षा के साथ-साथ उसके संस्कारों पर भी निर्भर होता है।

शिक्षा के बल पर व्यक्ति अच्छी पदवी हासिल कर सकता है एवं संस्कारों के माध्यम से उसका जीवन सफल, धन्य और सार्थक हो सकता है और व्यक्ति अपने जीवन के अंतिम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। आत्मा जब-जब हमारे शरीर में आती है, तब-तब वैदिक संस्कृति की व्यवस्था से संस्कारों की श्रृंखला से उसे ऐसा घेर दिया जाता है, जिससे उस पर कोई अनैतिक संस्कार पड़ने नहीं पाता है। वैदिक संस्कृति में मनुष्य को बिल्कुल बदलकर उसमें आमूल चूल परिवर्तन करने का जो प्रयास किया जाता है, उसे संस्कार कहते हैं। संस्कार का अर्थ वह प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से मनुष्य समाज में रहने के योग्य हो जाता है। वैदिक संस्कृति की जो विचारधारा है, उसके अनुसार पिछला व अगला जन्म यह सब संस्कारों द्वारा मानस शोधन का सिलसिला है।

संस्कारों की लगातार चोट से आत्म तत्व पर पड़ी माया को धो डालने का प्रयत्न है। मनुष्य संस्कारों के माध्यम से ही मुक्ति, आनंद को प्राप्त कर अपने जीवन को सफल, धन्य और सार्थक कर सकता है तथा जीवन जीने की कला भी सीख सकता है। इन संस्कारों की परम्परा अति प्राचीन है और इनका विस्तार भी समृद्ध है, लेकिन विभिन्न अध्ययनों के माध्यम से विदित होता है कि प्राचीनकाल की अपेक्षा वर्तमान समय इस दिशा में अधिक उदासीन है।

संस्कारों का हमारे जीवन में विशेष महत्व है। यदि संस्कार न हो तो हमारी सामाजिक जिम्मेदारियाँ और सामाजिक भागीदारी शून्य होगी। जैसा कि हम ऊपर पढ़ चुके हैं कि संस्कारों की पहली पाठशाला घर से शुरु होती है। हम जो घर से सीखते हैं, वही बाहर करते हैं। इसके बाद स्कूल में संस्कारों का समायोजन होता है। इसके अलावा संस्कारों में एक अहम संस्कार है जिसे परोपकार कहा जाता है। परोपकार के जरिए ही समाज में एक-दूसरे की भावनाओं को समझ पाते हैं। इसी के जरिए हम एक-दूसरे की मदद के लिए प्रेरित होते हैं। यदि यह संस्कार न हो तो हम समाज में कोई स्थान प्राप्त नहीं कर सकते।

संस्कार एक प्रकार से मनुष्य की आत्मा में बचपन में ही व्यक्तिगत नैतिकता और आचार-विचार का बीज बोने जैसा है, ताकि इन मूल्यों का पालन जीवन का हिस्सा बन जाए और जीवन भर उसके साथ बना रहे। “मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्” अर्थात मानव तू मानव बन और दिव्य संतान का निर्माण कर। हर वस्तु का मूल्य उसके फल से जाना जाता है। श्रेष्ठ संस्कारवान मानव का निर्माण ही संस्कारों का मुख्य उद्देश्य है। संस्कारों के द्वारा ही मनुष्य में शिष्टाचार एवं सभ्य

आचरण की प्रवृत्ति का विकास होता है। संस्कारों को भाषण या प्रवचन से विकसित नहीं किया जा सकता है, अपितु यह व्यवहार से विकसित होता है।

मूल्य शब्द का तात्पर्य मूलतः जीवन मूल्य अर्थात जीवन के मानदंडो से ही होता है। मूल्य मानव समाज की सभ्यता और संस्कृति के परिचालक तत्व हैं। किसी भी समाज की उन्नति मानवीय मूल्यों पर ही आधारित होती है। सत्य, धार्मिकता, शांति, प्रेम और अहिंसा ये पाँच मानवीय मूल्य एक-दूसरे पर निर्भर और एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। सभी मूल्य व्यक्तित्व विकास और सामाजिक प्रतिष्ठा के सोपान भी हैं।

प्रो. मैकेंजी के अनुसार, 'मूल्य या जीवन मूल्य से हमारा आशय उस विचार से है, जो एक विचारशील प्राणी के चिंतन का परिणाम है।' मूल्य मानव पर ऊपर से ही आरोपित नहीं किए जाते बल्कि यह मानव की अनुभूतियों का सत्य होते हैं, जो आत्मोपलब्धि की प्रक्रिया को कार्यान्वित कर अपनी सुंदरता, उदारता और महत्ता के कारण समाज द्वारा जीवन मूल्य के रूप में स्वीकार किए जाते हैं। जीवन मूल्यों का मूल उद्देश्य मानव जीवन का संयमित तथा व्यवस्थित कर सुखद परिणति करना है।

जीवन मूल्य के वास्तविक स्वरूप महत्व और अंतिम लक्ष्य के रूप में विश्व के इतिहास में मुख्यतः दो भिन्न धारणाएँ देखने को मिलती हैं। पहली धारणा कहती है कि विश्व नश्वर है और असत्य भी। असत्य के पीछे भागना बेकार है। इसलिए कल्पना जगत से बाहर निकलकर परम सत्य की खोज में अपना जीवन व्यतीत करना चाहिए। दूसरी धारणा भोगवाद पर जोर देती है। इसके अनुसार प्रत्येक वस्तु के उपभोग में जीवन की सार्थकता निहित है।

भारतीय दर्शन में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष ऐसे मूल्य हैं, जिनमें सभी मूल्यों का समाहार किया गया है। भारतीय परिवेश में मानव के आध्यात्मिक विकास पर अधिक जोर दिया गया है। मनुष्य शरीर, बुद्धि, मन तथा आत्मा नामक चार तत्वों से मिलकर बना है। अर्थात संपत्ति से शरीर का विकास, काम और प्रेम से मन का विकास, धर्म से बुद्धि का विकास एवं मोक्ष से आत्मा का विकास संभव है। इन चारों पुरुषार्थों को सभी दर्शन मान्यता देते हैं। इस संबंध में बाबू गुलाब राय मानते हैं कि, 'हमारे जीवन मूल्य इन्हीं आदर्शों में समा जाते हैं।'

मानव मूल्य जैसे नैतिकता, सद्भावना, करुणा, न्याय, सहिष्णुता आदि का विकास तभी संभव होता है जब व्यक्ति अपनी परिस्थितियों के साथ ताल-मेंल बैठाता है और उसके अनुकूल चलता है। मानवीय मूल्य वे संद्गुण हैं जिनके आधार पर हम अपने व्यवहार में नैतिक मूल्यों को लाते हैं। ये मूल्य हमें दूसरों के साथ सद्भाव के साथ रहने में मदद करते हैं। मानवीय मूल्य सार्वभौमिक होते हैं और सभी लोगों द्वारा साझा किए जाते हैं।

विश्व की त्रास्त स्थिति संस्कारों एवं मूल्यों में आए परिवर्तन का ही परिणाम है। प्रत्येक क्षेत्र में मूल्य परिवर्तन हो रहे हैं। जो पुराना है वो छूट रहा है और जो नया है वह आधुनिकीकरण की देन है। मानव अपने प्राचीनतम संस्कारों और मूल्यों को त्यागकर जिस पाश्चात्य संस्कृति की दौड़ में दौड़ रहा है, वह उसे पतंग की ओर खींच रही है। वे मूल्य ही हैं जो व्यक्ति को समाज में श्रेष्ठ और संभ्रांत बनाते हैं और मूल्य ही है जो व्यक्ति को सबकी दृष्टि में गिराकर निम्न स्थान पर पहुँचाती

है। यह सब परिस्थितियाँ मनुष्य की मानसिक स्वरूप, बनते-बिगड़ते जीवन मूल्यों का ही परिणाम है। मानव जीवन में मूल्य हर प्रकार से मूल्यवान है। इस प्रकार मानवीय जीवन संस्कार और जीवन मूल्य का उसके नैतिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान है, जिसके आधार पर वह आने वाली पीढ़ियों हेतु एक सभ्य समाज का निर्माण करता है।

अतः मानव में शिक्षा एवं संस्कार को ऐसे प्रकाश स्तंभ के रूप में देखा जा सकता है जो व्यक्ति के व्यक्तितत्व को निखार कर एक नया रूप देने का कार्य करता है। सही शिक्षा एवं अच्छे संस्कार व्यक्ति के जीवन के मूल्यों के एक नए आयाम तक ले जाने में अत्यंत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। किसी भी व्यक्ति के जीवन में शिक्षा एवं संस्कार एक दूसरे के पूरक हैं। इन दोनों में से किसी एक की भी कमी के कारण व्यक्ति का जीवन अधूरा सा लगता है इसलिए एक सुव्यवस्थित एवं उच्च आदर्शों वाले जीवन मूल्यों को प्राप्त करने के लिए सही शिक्षा एवं अच्छे संस्कारों की नितांत आवश्यकता है।

*****

डिजिटल अरेस्ट

इम्तियाज अहमद,
कनिष्ठ अनुवादक

देश भर में साइबर क्राइम तेजी से बढ़ता जा रहा है। इन दिनों साइबर ठग धोखाधड़ी के लिए डिजिटल अरेस्ट स्कैम कर रहे हैं। डिजिटल अरेस्ट के जरिये करोड़ों रूपये का चूना लगा रहे हैं। डिजिटल अरेस्ट एक साइबर स्कैम है। डिजिटल अरेस्ट स्कैम में फोन करने वाले कभी पुलिस, सी.बी.आई., नारकोटिक्स, आर.बी.आई. एवं दिल्ली या मुंबई पुलिस अधिकारी बनकर आत्मविश्वास से बात करते हैं। वॉट्सएप या स्काइप कॉल पर जब कनेक्ट करते हैं तो आपको फर्जी अधिकारी एकदम असली से लगते हैं। वे लोग पीड़ित इमोशनली और मेंटली टॉर्चर करते हैं।

दरअसल, हाल ही में देश के साइबर क्राइम रिकॉर्ड के आंकड़ों से पता चला है कि इस साल की शुरुआती कुछ महीनों में ही भारतीयों को डिजिटल अरेस्ट की धोखाधड़ी के जरिए 120.30 करोड़ रुपये की लूट का शिकार बनाया गया है। केंद्रीय गृह मंत्रालय (MHA) के अनुसार, डिजिटल अरेस्ट के जरिए धोखाधड़ी काफी ज्यादा बढ़ गई है। इस अपराध को अंजाम देने वाले ज्यादातर अपराधी दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों, म्यांमार, लाओस और कंबोडिया जैसे देशों में रहते हैं।

डिजिटल अरेस्ट के 46 प्रतिशत मामले बढ़े

जनवरी से अप्रैल तक के आंकड़ों के विश्लेषण के अनुसार भारतीय साइबर अपराध समन्वय केन्द्र (आई4सी) ने पाया कि डिजिटल अरेस्ट के अपराध के तहत दर्ज साइबर धोखाधड़ी के 46 प्रतिशत मामले सामने आए हैं। इसमें 1776 करोड़ रूपये का नुकसान हुआ है। इनमें से ज्यादातर मामले म्यांमार, लाओस एवं कंबोडिया से ही फ्रॉड वाले थे।

राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल (एनसीआरपी) के आंकड़ों से पता चलता है कि इस वर्ष अर्थात 1 जनवरी, 2024 से 30 अप्रैल, 2024 के बीच 7.4 लाख शिकायतें दर्ज की गईं, जबकि 2023 में 15.56 लाख शिकायतें प्राप्त हुईं। 2022 में कुल 9.66 लाख शिकायतें दर्ज की गईं।

कैसे होती है डिजिटल अरेस्ट की शुरुआत?

डिजिटल अरेस्ट की शुरुआत एक मैसेज या फोन कॉल के साथ होती है। डिजिटल अरेस्ट करने वाले ठग लोगों को फोन करके कहते हैं कि वे पुलिस विभाग या आयकर विभाग से बात कर रहे हैं। ये कहते हैं कि आपके पैन और आधार का इस्तेमाल करते हुए तमाम चीजों की खरीदी की गई हैं या फिर मनी लॉन्ड्रिंग की गई है। कई बार यह भी दावा किया जाता है कि वे कस्टम विभाग से बोल रहे हैं और आपके नाम से कोई पार्सल आया है जिसमें ड्रग्स या प्रतिबंधित चीजें हैं।

यकीन दिलाते हैं कि उनके साथ या उनके परिजन के साथ कुछ बुरा हो चुका है या होने वाला है। सामने बैठा व्यक्ति पुलिस की वर्दी में होता है, ऐसे में ज्यादातर लोग डर जाते हैं और उनके जाल में फंसते चले जाते हैं। आसान भाषा में कहा जाए तो डिजिटल अरेस्ट में फर्जी सरकारी अधिकारी बनकर वीडियो कॉल के माध्यम से लोगों को डरा-धमकाकर उनसे बड़ी रकम वसूली जाती है।

डिजिटल अरेस्ट का खेल कैसे खेला जाता है?

- अनजान नंबर से व्हाट्सएप पर वीडियो कॉल आती है।
- किसी में फंसने या परिजन के किसी मामले में पकड़े जाने की जानकारी दी जाती है।
- धमकी देकर वीडियो कॉल पर लगातार बने रहने के लिए मजबूर किया जाता है।
- स्कैमर्स मनी लॉन्डिंग, ड्रग्स का धंधा या अन्य अवैध गतिविधियों का आरोप लगाते हैं।
- पीड़ित को परिवार या फिर किसी को भी इस बारे में कुछ न बताने की धमकी दी जाती है।
- वीडियो कॉल करने वाले व्यक्ति का बैकग्राउंड पुलिस स्टेशन जैसा नजर आता है।
- पीड़ित को लगता है कि पुलिस उससे ऑनलाइन पूछताछ कर रही है या मदद कर रही है।
- केस को बंद करने और गिरफ्तारी से बचने के लिए मोटी रकम की मांग की जाती है।

डिजिटल अरेस्ट को कैसे पहचानें?

डिजिटल अरेस्ट की पहचान करने के लिए सतर्कता की जरूरत है। अगर आपके पास किसी अनजाना नंबर से कोई फोन या वॉट्सएप कॉल आती है तो रिसीव करते वक्त मुंबई पुलिस की एडवाइजरी को याद रखें।

ये है मुंबई पुलिस की एडवाइजरी-

- पुलिस अधिकारी कभी भी अपनी पहचान बताने के लिए वीडियो कॉल नहीं करेंगे।
- पुलिस अधिकारी कभी भी आपको कोई एप डाउनलोड करने के लिए नहीं कहेंगे।
- पहचान पत्र, FIR की कॉपी और गिरफ्तारी वारंट ऑनलाइन साझा नहीं किया जाएगा।
- पुलिस अधिकारी कभी भी व्यॉएस या वीडियो कॉल पर बयान दर्ज नहीं करते हैं।
- पुलिस अधिकारी कॉल पर पैसे या पर्सनल जानकारी देने के लिए डराते-धमकाते नहीं हैं।

पुलिस कॉल के दौरान अन्य लोगों से बात करने से नहीं रोकती है।

कानून में डिजिटल अरेस्ट का कोई प्रावधान नहीं है, क्राइम करने पर असली वाली गिरफ्तारी होती है।

डिजिटल अरेस्ट से कैसे बचें?

भारतीय कंप्यूटर आपातकालीन प्रतिक्रिया टीम (सी.ई.आर.टी.-एन.) ने लोगों को डिजिटल अरेस्ट से बचाने के लिए एडवाइजरी जारी की है। सी.ई.आर.टी. ने बताया डिजिटल अरेस्ट से कैसे बच सकते है...

1. सतर्क रहे, सुरक्षित रहें

कोई भी सरकारी जांच एजेंसी आधिकारिक संचार के लिए वॉट्सएप या स्काइप जैसे प्लेटफॉर्म्स का उपयोग नहीं करती। जबकि ऑनलाइन ठग इन्हीं का इस्तेमाल कर रहे हैं। शुरुआत में शक होने पर तुरंत फोन काट दें। फोन पर लंबी बातचीत करने से बचें।

2. इग्नोर करें

साइबर ठग डिजिटल अरेस्ट के लिए पीड़ितों को फोन कॉल, ई-मेंल से संदेश भेजते हैं। बताते है कि आप मनी लॉन्डरिंग या चोरी जैसे अपराधों के तहत जांच के दायरे में हैं। ऐसे किसी कॉल और ई-मेंन पर ध्यान न दें।

3. घबराएं नहीं

साइबर ठग कॉल पर बातचीत के दौरान गिरफ्तारी या कानूनी कार्रवाई की धमकी देते हैं। उनकी बातचीत और फर्जी तर्कों से घबराहट हो सकती है, लेकिन घबराना नहीं है। न ही बैंक डिटेल व यू.पी.आई. आईडी शेयर करनी है।

4. जल्दबाजी करने से बचें

कॉल या वीडियो कॉल पर ठगों के सवालों और तर्को का जवाब देने में जल्दबाजी न करें। शांत रहें, सिर्फ सुनें। अनजान नंबरों से आए सामान्य और वीडियो कॉल पर भी कोई निजी जानकारी न दें।

5. साक्ष्य जुटाएं

कॉल के स्क्रीनशॉट या वीडियो रिकॉर्डिंग सेव करें ताकि आवश्यक होने पर उपयोग कर सकें।

6. फिशिंग से बचें

कॉल के अलावा ई-मेंल के जरिए ऐसे संदेश भेजे जा रहे हैं, जो अविश्वसनीय लगते हैं, ये फिशिंग के मामले हैं। इसमें ठग आपके कंप्यूटर तक पहुंचकर व्यक्तिगत जानकारी चुराते हैं।

7. धोखाधड़ी को रिपोर्ट करें

किसी भी संदिग्ध गतिविधि की तुरंत साइबर क्राइम हेल्पलाइन 1930 या वेबसाइट cybercrime.gov.in पर रिपोर्ट करें।

क्या फर्जी कॉल्स की ऑनलाइन शिकायत कर सकते हैं?

व्हाट्सएप पर आने वाली फर्जी कॉल्स और मैसेज को रोकने के लिए टेलीकॉम विभाग ने 'चक्षु' (Chakshu) नाम से एक पोर्टल लॉन्च किया है। इस पर स्पैम कॉल, मैसेज, वॉट्सएप पर आने वाली फर्जी कॉल्स व मैसेज की शिकायत कर सकते हैं।

चक्षु पोर्टल पर शिकायत कैसे करें?

स्टेप 1: संचार साथी पोर्टल की ऑफिशियल वेबसाइट (sancharsaathi.gov.in) पर जाएं।

स्टेप-2: सिटीजन सेंट्रिक सर्विसेज (Citizen Centric Services) पर क्लिक करें।

स्टेप-3: रिपोर्ट सस्पेक्टेट फ्रॉड कम्युनिकेशन (Report Suspected Fraud Communication) पर क्लिक करें।

स्टेप-4: फिर कंटीन्यू फॉर रिपोर्टिंग (Continue for Reporting) के ऑप्शन पर जाएं।

स्टेप-5 : यहां एक फॉर्म का पेज खुलेगा। इसमें फर्जी कॉल या मैसेज की जानकारी भरें।

स्टेप-6: फॉर्म में एक फ्रॉड लिस्ट नजर आएगी। अपनी शिकायत पर क्लिक करें।

स्टेप-7: इसमें फेक कॉल या मैसेज का स्क्रीनशॉट भी अपलोड करें।

स्टेप-8: लास्ट में अपना मोबाइल नंबर और नाम लिखें।

स्टेप-9: कैप्चा कोड और OTP वेरिफिकेशन के बाद फॉर्म सबमिट कर दें।

महाराष्ट्र पुलिस की चेतावनी

डिजिटल अरेस्ट, फर्जी मैट्रिमोनियल वेबसाइट, डेटिंग ऐप्स, के.वाई.सी., ओ.टी.पी., क्यू.आर. कोड और व्हाट्सएप, टेलीग्राम और रोजगार साइटों के जरिए भी ऑनलाइन धोखाधड़ी से सतर्क रहें।

डिजिटल अरेस्ट से कितना नुकसान?

मुख्य कार्यकारी अधिकारी (आई4सी) ने मई में जनवरी अप्रैल के आंकड़े जारी करते हुए कहा था कि हमने पाया कि भारतीयों ने डिजिटल गिरफ्तारी में 120.3 करोड़ रूपये, ट्रेडिंग घोटाले में 1420.48 करोड़ रूपये, निवेश घोटाले में 222.58 करोड़ रूपये एवं रोमांस / डेटिंग घोटाले में 13.23 करोड़ रूपये गंवाए।

गृह मंत्रालय की साइबर विंग के मुताबिक, डिजिटल अरेस्ट के जरिए साइबर ठग हर दिन मासूमों से छह करोड़ रुपये लूट रहे हैं। इस साल अक्टूबर तक डिजिटल अरेस्ट के कुल 92,334 मामले सामने आए हैं, जिनमें 2140 करोड़ रूपये से अधिक की धोखाधड़ी हुई है। अगर औसत निकाला जाए तो हर माह 214 करोड़ रुपये की साइबर ठगी हुई है। यह एक बेहद छोटा सा आंकड़ा है, जबकि असली नंबर इससे कहीं बहुत ज्यादा है। बहुत सारे लोग तो डर और बदनामी की वजह से सामने ही नहीं आते हैं।

*****

किंकर्तव्यविमूढ़

संतोष कुमार श्रीवास्तव,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

व्यक्ति के जीवन में अक्सर ऐसी परिस्थितियाँ आती रहती हैं जिनसे निपटने के लिए उसे जोखिम उठाने की जरूरत रहती है, जिसको लेकर व्यक्ति असमंजस की स्थिति में रहता है। वह यह समझ नहीं पाता कि उसे जोखिम उठाना चाहिए या नहीं। वास्तव में उसे यह असमंज विपरीत परिणाम को लेकर मन में बैठी आशंका के कारण होता है।

ऐसी स्थिति में व्यक्ति के पास चयन के लिए प्रायः दो ही विकल्प होते हैं। प्रथम कि वह व्यक्ति जोखिम उठाए और उस परिस्थिति का सामना अडिग होकर करे और परिणाम की जिम्मेदारी स्वयं लें। द्वितीय कि वह कुछ भी न करें और सारी चीजें ईश्वर के भरोसे छोड़ दें। यदि व्यक्ति प्रथम विकल्प का चयन कर जोखिम उठाता हो तब या तो मन के अनुकूल परिणाम मिलेंगे या प्रतिकूल।

ऐसा करने से दो विकल्प हो सकते हैं- या तो वह मनवांछित परिणाम पाने में सफल हो जाएगा या फिर असफल। सफल होना उसके लिए गर्व की बात होगी, जबकि असफल होना उसके लिए अपने जोखिम भरे प्रयत्न पर पछतावा होगा कि काश! उसने ऐसा नहीं किया होता। वही जिसके मन में असफल होने का डर रहता है, वह दूसरे विकल्प का चयन करता है। हालांकि बाद में उसे भी पछतावा होता है कि काश! जोखिम उठाकर कुछ प्रयास किया होता तो शायद परिणाम मन के अनुकूल होता।

इसका तात्पर्य यह है कि व्यक्ति जोखिम उठाए अथवा नहीं किंतु उसे पछतावा होना अपरिहार्य है। जोखिम लेने वाले व्यक्ति को अपने प्रयास पर पछतावा होता है तो वही जोखिम न लेने वाले को अपने प्रयास न करने पर।

अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि किसी भी असमंजस की स्थिति में व्यक्ति को जोखिम अवश्य उठाना चाहिए, क्योंकि कम से कम उसमें सफल होने की संभावना कायम रहती है। वही प्रयास न करने पर सफल होने की संभावना नगण्य हो जाती है। अपने अधिकार क्षेत्र में आने वाले सारे प्रयास करना ईश्वर के भरोसे छोड़ने से अधिक अच्छा है।

*****

लोभ वृत्ति-रामचरित मानस की दृष्टि में

प्रशांत शुक्ला,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

श्री राम, ……. एक ऐसा नाम, जिसे इस राष्ट्र की (पूर्वी) संस्कृतियों में वो सर्वोच्च स्थान प्राप्त है जो संभवतः विश्व भर में किसी भी आदर्श चरित्र को यह सौभाग्य नहीं मिला। विश्व के समस्त संस्कृतियों में जो आदर्श रूप हैं, वो एक क्षेत्र विशेष को निरूपित करते हैं चाहे वो वीरता का क्षेत्र हो, दर्शन का क्षेत्र हो, ज्ञान -विज्ञान का क्षेत्र हो, साधन और योग का क्षेत्र हो अथवा अध्यात्म का क्षेत्र हो, उनका चरित्र वस्तुतः एकांगी ही है, परन्तु श्री राम का व्यक्तित्व एक महामानव और पूर्णपुरुष के रूप में हमारे मानस पटल पर कभी ना मिटने वाले चित्र कि तरह अंकित है।

इसका कारण सिर्फ यह नहीं कि उन्हे हमारे शास्त्रों में भगवान कि तरह प्रस्तुत किया गया और धार्मिक मान्यता के वशीभूत हमारी उनके लिए भावना मात्र है, बल्कि उन्हें एक इतिहास पुरुष और राजपुत्र के रूप में भी देखा जाय तो उनके द्वारा स्थापित आदर्श सम्पूर्ण मानवजाति को आज भी और भविष्य में भी दिशा निर्देश देने हेतु सर्वदा सक्षम है। उनका आदर्श भूत-काल का इतिहास नहीं वर्तमान का दर्पण है। अगर वर्तमान में भी हम अपनी समस्याओं का समाधान उनके द्वारा आचरित आदर्शों से प्राप्त करने कि चेष्टा करें तो यह व्यक्तिगत अपने लिए ही नहीं वरन सम्पूर्ण समाज के लिए कल्याणकारी होगा और एक सुन्दर समाज की रचना की जा सकती है। यदि सूक्ष्मता से विचार करें तो हम पाएंगे कि उनके द्वारा जिन परिस्थितियों / कठिनाइयों का सामना उस काल में किया गया वह सिर्फ त्रेता युग का सत्य नहीं बल्कि वो घटनाएं / परिस्थितियां आज भी हमारे समक्ष है लेकिन उसका समाधान हम अपनी अभिमान भरी बुद्धि से करने का प्रयास करते है और नई समस्याओं को निमंत्रण दे देते हैं। वर्तमान में अधिकांश मानव समाज जिस समस्या से ग्रसित है अथवा जिधर अग्रसर है वो मूलतः महत्वाकांक्षा के घोड़े पर बैठकर, सुविधाओं / भौतिक सुख भोग के सड़क पर, रिश्तों नातों मित्रों को एक स्टेशन की तरह छोड़ता हुआ अंधी दौड़ में दौड़ता जा रहा है यह मानसिक अवसाद और अकेले पन के लक्ष्य पर जाकर ही खत्म होती है। इसके पीछे मूल वृत्ति क्या है? लोभ।

वैसे तो उनके जीवन में ऐसे कई प्रसंग हैं परन्तु लोभ पर आधारित जो प्रसंग मुझे प्रिय है वह है अयोध्या कांड का कैकेयी- मंथरा प्रसंग, जिससे संभवतः हम सभी परिचित होंगे। इस पर थोड़ा विचार करें। मंथरा हैं कौन? लोभ वृत्ति। जीवन में काम क्रोध और लोभ का समन्वय या यूं कहे कि अनुशासित या मर्यादित काम, क्रोध और लोभ को ही जीवन में आवश्यक बताया गया है इसमें से किसी की भी अधिकता हमें कुपथ्य पर ले जाती है और हमें अंततः कष्ट ही मिलता है। जिस तरह से आयुर्वेद में स्वास्थ्य में वात, पित्त, कफ का असंतुलन हमें शारीरिक रूप से अस्वस्थ रखता है वैसे ही जीवन में काम क्रोध और लोभ के समन्वय का अभाव हमें मानसिक रूप से रोगी बनाता है। राम चरित मानस के अनुसार-

काम बात कफ लोभ अपारा। क्रोध पित्त नित छाती जारा॥

लोभ को कफ के समान बताया गया है जो जब जकड़ लेता है तो व्यक्ति को सांस लेने में भी परेशानी का सामना करना पड़ता है। प्रश्न उठता है कि वास्तव में लोभ है क्या?

लोभ और लाभ में अंतर है।

जब अपने कर्म के बदले हम कुछ फल चाहते हैं यह लाभ वृत्ति है परन्तु अपने लाभ कि चिंता से ज्यादा दूसरे कि हानि हो या दूसरे कि हानि पर खड़े होकर अपना लाभ प्राप्त करना यह लोभ वृत्ति है। मंथरा मूर्तिमान लोभ वृत्ति है। वह जानती है कि महाराज दशरथ भरत को राज्य देने के लिए प्रतिबद्ध थे तो वह उन्हें उस वचन कि याद ना दिलाकर उस वचन का स्मरण कराती है जिसमें महाराज दशरथ को कैकेयी जी को दो वरदान देने थे-

दुइ बरदान भूप सन थाती। मागहु आजु जुड़ावहु छाती ॥

यह जो दो पाने कि वृति हैं। एक नहीं दो, मेंरा लाभ ही नहीं उसकी हानि भी यही है लोभ वृत्ति। और इस वृत्ति का परिणाम क्या? जिस व्यक्ति के अदर यह वृत्ति है यह उसे मानसिक रोगी तो बना ही देता है जो इनका संग जो करते हैं उनको भी यह अपने जैसे रोगी बनाने में सक्षम है। मंथरा मानसिक रोगी है, उसे दो मानसिक रोग है जो अत्यधिक लोभ वृत्ति के दो परिणाम है, वह है (1) राजयक्ष्मा (ii) मानसिक कोट। राजयक्ष्मा जब हम किसी का सुख देखकर दु:खी हो जाए तो समझिए कि हमें राजयक्ष्मा नामक मानसिक रोग हो चुका है।

पूछेसि लोगन्ह काह उछाहू। राम तिलकु सुनि भा उर दाहू ॥1॥

लोगों से उसे राम के राजतिलक का समाचार मिला, समाचार पाते ही उसका हृदय दुख से जलने लगा। राम तो अत्यंत शील वान है' उन्होंने मंथरा का कुछ नहीं बिगाड़ा है, लेकिन यही तो है इस रोग का लक्षण। दूसरा है मानसिक कोढ़, हम किसी का सुख देखकर दु:खी ही ना हों बल्कि ऐसा प्रबंध करने कि कोशिश करें कि किस तरह से उसका सुख छीन लें, यह दूसरा रोग-

करइ बिचारु कुबुद्धि कुजाती। होइ अकाजु कवनि बिधि राती॥

(• कृपया कुजाति का सार्थक अर्थ लें जो व्यक्तियों का समूह ऐसी मानसिकता का हो)

दूसरे कि सफलता में कुछ लोग अपने को किसी तरह समझा लेते है कि अपना अपना भाग्य है ईश्वर का खेल है परन्तु कुछ लोग उससे भी आगे निकल कर सफल व्यक्ति का काम बिगाड़ने कि सोचने लगते है। अब हम सब विचार करें कि आज के युग में कितने लोग इन रोगों से बचे हैं?

और यह विचार दूसरे हेतु नहीं है कि हम सोचे कि वह व्यक्ति इस रोग से वह व्यक्ति उस रोग से ग्रसित है बल्कि स्वतः (आत्ममंथन) के लिए है कि हम किससे ग्रसित हैं।

यह प्रसंग यह बताता है कि ऐसे व्यक्तियों का संग सदैव घातक है, अपने लिए भी और सभी के लिए भी, क्योंकि शारीरिक रोगों में कुछ रोग ही संक्रामक रोग है परन्तु मानसिक रोग तो सभी संक्रामक ही है। परिणाम क्या हुआ? कैकेयी जी भी इसी रोग से ग्रस्त हो जाती है। किसका साथ हमें प्राप्त होता है यह हमारे वश में नहीं परन्तु किसका संग करना है यह हम अवश्य ही चुनते हैं। तन से साथ साथ है और मन से साथ, सग। कुसंग पर गीता में कहा गया है-

"ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेष्पजायते", सङ्गात् संजायते कामः कामात् क्रोधोऽभिजायते ।

कुसंग से कामनायें, कामनाओं से क्रोध क्रोध से मोह, मोह से स्मृति विभ्रम, स्मृति विभ्रम से बुद्धि नाश, बुद्धि नाश से सम्पूर्ण विनाश।

इसी क्रम जो बताया गया कैकेयी जी के जीवन में घटित होता है, कुसंग से भरत राज्य और राम वन गमन कि कामना, कामना में देरी या अड़चन से क्रोध जो उन्हे कोप भवन में पहुंच देता है और वरदान मागने पर मोह द्वारा उत्पन्न स्मृति विभ्रम जो राम के शील को उनकी ममता को उनके आदर भाव को भूल गई जिसका उन्हें खुद विश्वास था। उन्ही के वचन है कि राम

मो पर करहिं सनेहु बिसेषी। मैं करि प्रीति परीछा देखी ॥

माँ कैकेयी उनका स्वभाव ही नहीं भूली, ऐसा बुद्धि नाश हुआ कि अपना विधवापन का ही कारण नहीं बनी वरन राम को चौदह वर्ष का वन वास, भरत के तिरस्कार कि उन्होंने माँ कहना ही छोड दिया, कौशल्या और सुमित्रा जी के पुत्र वियोग, उर्मिला का दुख, महाराज दसरथ कि मृत्यु से राज्य के अनाथ होने का कारण बनी ।

वस्तुतः अन्तः शरीर के चार मुख्य हिस्से बताए गए है, मन बुद्धि, चित्त और अहंकार । इसमें से किसी एक की क्रिया शीलता प्रभावित हो तो दूसरे से काम ले सकते हैं, जैसे मन रोगी हो (मन में कोई गलत भावना आई) और बुदधि उसका समर्थन ना करें तो गलत कार्य से व्यक्ति बच जाएगा परन्तु जब चारी कि क्रियाशीलता मंद हो तो ? मथरा ने उन्हें मन से रोगी बन गई बना दिया, उनकी बुद्धि में विश्वम उत्पन्न हो गया, उनका चित सिर्फ कामना पूर्ति कि और है और उन्मे अहकार तो पहले से था ही। यह है कुसग का परिणाम। यह है लौभ वृत्ति का परिणाम लोभ का कफ ऐसे जकड लिया कि महाराज दसरथ का अनुनय विनय, सभी श्रेष्ठी का जान उस कफ को पिचला नहीं पाया और उन्होंने अपनी ही नहीं सभी कुटुबियी और पूरे राज्य के सुख कि तिलांजलि दे दी।

परन्तु इसका उपचार/बचाव क्या है? यही हमारे लिए उपादेय है।

इसका हल तो यही है कि हम सर्वप्रथम ऐसे लोगों के संग का बचाव करें और अगर यदि यह रोग लग जाए तो वैद्य कि तलाश करें। सामान्यतः इन रोगियों का यह लक्षण है कि ये अपने को रोगी ना मानकर सामने वाले को रोगी मानते हैं। हनुमानजी और रावण संवाद में हनुमान जी कहते हैं कि-

मोहमूल बहु सूल प्रद, त्यागहु तम अभिमान। भजहु राम रघुनायक, कृपा सिंधु भगवान"

रावण तुम्हें मोह रोग है (मोह सकल व्याधिन कर मूला| इसकी एक ही दवा है कि सीता जी को वापस कर भगवान राम कि शरण लो। रावण कहता है कि मृत्यु निकट आई खल तोही अब जो रोगी वैदय को ही मरने को कहें उसका उपचार कैसे हो? वैद्य क्या है? संत ही वैद्य है। संतों का आधरण समझे।

इस प्रसंग में भरत जी वैदय का कार्य करते हैं, पहले समाचार पाते ही वो माँ कैकेयी को भला बुरा कहते हैं

वर माँगत भई नहीं पौरा गरी न जीह मुह परेउ न कीरा ।

इसका उद्देश्य कुछ सुनाना नहीं बल्कि उन्मे पश्चाताप उत्पन्न करना है जिससे वह इस आग में जले और विचार करें कि जिस पुत्र के लिए मैंने सब कुछ बलिदान कर दिया वो मेंरी ऐसी बेइज्जती कर रहा है और जिसे मैंने निर्दोष होते हुए इतना कष्ट दिया वो पुत्र मेंरी स्तुति करके वन गया। पुनः माँ कैकेयी के सती होने जाने पर भरत जी उन्हें मना करते हैं और कहते है कि पिताजी ने आपका त्याग तो जीते जी ही कर दिया था तो अब उस लोक में तो उन्हें शांति का अनुभव करने दीजिए आपको अपने पास पाकर वो दु:खी हो जाएगे अभी और कष्ट देना बाकी है क्या?

श्री भरत के इन बातों ने माँ कैकेयी के अंत: करण में ऐसी पश्चाताप कि अग्नि जलायी कि उनका लोभ रुपी कफ उस अग्नि में पिघल कर समाप्त हो गया उनकी बुद्धि चैतन्य हो गई और चित्त श्री राम के दर्शन हेतु लालायित हो गई और अहंकार सर्वदा के लिए दूर हो गया। इस तरह उनका अंतःकरण शुदध और पवित्र हो गया चित्रकूट पहुंचते ही श्री राम ने उन्हें गले से लगा लिया।

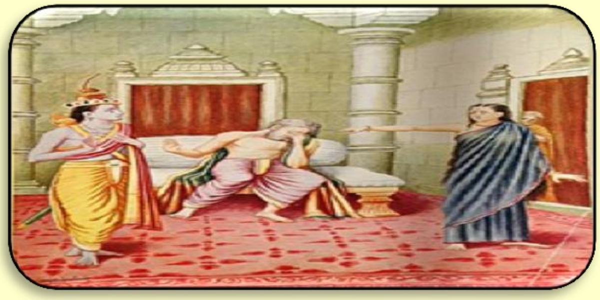

*****

विषयः- भाषा की भूमिका

हर्षिता दूबें,
पत्नी श्री संदीप कुमार पाठक,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

देश की एकता और अखंडता को बल देने में हिंदी भाषा का महत्वपूर्ण स्थान है, चाहे वह हिंदी सिनेमा हो, हिंदी गाने हो, हिंदी पुस्तकें हो, सभी विश्व में एक अहम स्थान रखते हैं। चाहे वह दक्षिण भाषी राज्य हो, पूर्वोतर के राज्य हो, पश्चिम के राज्य हो या फिर मध्य भारत के राज्य हों, हिंदी सिनेमा को देखना और हिंदी गानें सुनना सभी को प्रिय है। हिंदी भाषा, हिंदी सिनेमा जगत में अनेक लोगों को रोजगार मुहैया कराती है। हिंदी केवल भाषा एवं संचार का माध्यम ही नहीं है बल्कि देश में रोजगार देने का माध्यम भी है।

विश्व में अनगिनत भाषाएँ बोली जाती है और भारत जैसे विशाल देश में जो विविधताओं का प्रदेश है, वहा भाषाओं में भी विविधता अपार है। भारत की विशेषता उसकी विविधता और उसकी एकता जगजाहिर है। अगर हम यूरोप के देशों की बात करें तो वहाँ राष्ट्र का निर्माण भाषा के आधार पर है, वहां हर देश की अपनी भाषा है। वहा यूरोप एक होते हुए भी, भौगोलिक अखंडता के बावजूद भाषाई आधार पर अलग-अलग है और वहाँ एकता की भावना को देखना असंभव लगता है। भाषा के आधार पर वहाँ भेदभाव संभव है।

एक देश का निर्माण अगर भाषा के आधार पर है तो वहाँ भाषाई विभिन्नता का पनपना बहुत मुश्किल है और जहाँ विभिन्नता नहीं होगी वहां विचारों का आदार-प्रदान भी असंभव है। भारत जैसे देश में जहाँ भाषाएँ क्षेत्रीय और प्रादेशिक स्तर पर भिन्न-भिन्न है। उसके बावजूद हिंदी एक मात्र भाषा है जिसने पूरे देश को एक किया है। सभी देशवासियों को आपस में जोड़नें का काम किया है। विचारों के आदार-प्रदान को सुगम बनाने का कार्य हिंदी भाषा ने किया है।

भाषा मनुष्य को संस्कृति के साथ जीना व दूसरों के साथ उसके स्वयं के अस्तित्व का बोध कराती है। भारत की ताकत उसकी एकता, अखंडता और क्षेत्रीय विविधता में है। भाषायी बहुलता के कारण क्षेत्रीय असमानता और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर निर्भरता बढ़ गयी है। अगर भारतीय चाहे तो अपनी क्षेत्रीय आषाओं में सूचना आदान-प्रदान कर अपनी जरूरतों को पूरा कर सकते हैं। अंग्रेजी के अतिक्रमण ने भारतीय आषाओं का गला घोट दिया है, क्षेत्रीय विविधताओं और अवसरों को आगे आने से रोकने का काम किया है।

भारत में अधिकाधिक भाषाएँ और बोलियों है जिस कारण से भारत को भाषाओं का समागम स्थल कहना गलत नहीं होगा। भारत की विविधता, भाषायी बहुलवाद का प्रतीक है। भारत की भाषाओं की विशेषता है कि सभी भाषाएँ एक-दूसरे से इस प्रकार मिली-जुली है मानो एक-दूसरे की परछाई हो, मानों अनेक आत्माएँ एक शरीर के इर्द-गिर्द घूम रही हों। इसके बावजूद सभी भाषाएँ

अपनी दहलीज को जानती है और अपनी लक्ष्मण रेखा को कभी लांघने की कोशिश नहीं करती। भाषायी बहुलता भारतीय संस्कृति का भी आधार है।

परंतु राष्ट्र निर्माण और राष्ट्रीय एकता के निर्माण में जितना योगदान राष्ट्रभाषा हिंदी का है उसे नकारा नहीं जा सकता। साथ ही सभी भाषाओं को एक समान आदर मिलना और उनका एक समान विकास और प्रोत्साहन भी अनिवार्य है, नही तो भाषा विभेद के समाज में बहुत ही आसानी से अखंडता, विखंडता में परिवर्तित हो जाएगी और राष्ट्रीय एकता को बचाना असंभव हो जाएगा।

भारतीय भाषाएँ आपस में बहने बनकर देश की एकता और अखंडता के सूत्र को चरितार्थ कर सकती है। भारतीय भाषाओं की बड़ी बहन की पदवी संस्कृत से निकली हिंदी को देना हिंदी पर कर्तव्यों का बोध कराती हैं। भारतीय भाषाओं के उपयोग को शब्दों में पिरोकर अपने में समाहित कर सही मायनों में भारत की संपर्क भाषा होने की भूमिका निभा सकती है।

महात्मा गांधी ने आजादी से पहले ही स्वदेशी का नारा देते हुए भांप लिया था कि अंग्रेजी, हिंदुस्तानियों को सम्मोह लेगी और भारतीय लोगों को उनकी पहचान से अलग कर देगी। अंग्रेजी के भूत का खतरा केवल हिंदी के लिए ही नहीं अपितु भारतीय भाषाओं पर लटक रहा है। जहां सभी अपनी पहचान अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करना चाहते हैं बेशक उन्हें उसके लिए अपनी पहचान ही क्यो न गवानी पड़े। यहाँ बात भारतीय भाषाओं के पहचानने को कायम रखने की है।

देश की संस्कृति और उसके सामाजिक उत्थान में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका है जिससे राष्ट्रीय एकता को कायम करना संभव है। भाषा के उत्थान से राष्ट्रीय एकता की भावना को मजबूत किया जा सकता है। आज भूमण्डलीकरण के युग में जहाँ स्थानीय विशेषताएँ खोजी जा रही है और आधुनिकता के नाम पर हम भारतीय केवल नकल करने में लगे हैं, वही भाषा-संस्कृति की अहमियत, बाजारवाद और पूँजीवाद के समक्ष संकीर्ण नजर आती है। लेकिन हमें राष्ट्रीय एकता के महत्व को भारतीय भाषाओं के अतसंबंध तथा भारतीय संस्कृति की विराटता के बल पर आगे बढ़ाना होगा। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान को बनाए रखने के लिए इस संबंध को समझना और जीना होगा नहीं तो भारतीयता का कोई अर्थ नहीं रहेगा और देश की अखंडता और राष्ट्रीय एकता पर भी असर पड़ेगा।

भाषा ही एक मात्र माध्यम है जिससे समाज और संस्कृति के मध्य संतुलन स्थापित किया जा सकता है:-

- विद्यार्थियों के मध्य, भारतीय मूल्यों में आस्था बनाए रखने के लिए जागरुकता का कार्यक्रम चलाना चाहिए। जहाँ भाषायी भेदभाव को मिटाकर, भारतीय मूल्यों जैसे समान नागरिकता, विविधता में एकता, लोकतंत्र, न्याय, स्वतंत्रता, बंधुत्व आदि के विचारों को विकसित किया जा सके।

राष्ट्रीय स्तर पर पाठ्यक्रमों में ऐसी पुस्तकों का निर्माण किया जाए जहाँ भारतीय भाषाओं के माध्यम से राष्ट्रीय एकता के उत्थान में मदद मिल सके। राष्ट्रीय एकीकरण की भावना को विकसित करने हेतु सभी संप्रदायो, जातियों एवं राज्यों के मध्य अधिक मेल-जोल उत्पन्न करने हेतु विभिन्न स्तरों पर, विभिन्न उत्सवों का आयोजन किया जाना चाहिए जिसमें भाषा किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न ना कर सके। देश की ऐतिहासिक धरोहर को विभिन्न माध्यमों से विभिन्न भाषाओं में ज्यादा से ज्यादा फैलाना चाहिए।

- विभिन्न भाषाओं में प्रकाशन के माध्यम से प्रत्येक संस्कृति एवं साहित्य के क्षेत्र से जुड़ी महान विभूतियों से परिचित कराना चाहिए।
- राष्ट्रीय स्तर का पाठ्यक्रम तैयार किया जाना चाहिए जिसमें विभिन्न बोलियों और उनके लोकगीत एवं कहानियों को स्थान दिया जाना चाहिए। जिसके माध्यम से क्षेत्रीय विभिन्नता, क्षेत्रीय विविधता में परिवर्तित हो सके और क्षेत्रीय दूरियों मिट सके।
- विद्यार्थियों के मध्य, विभिन्न राज्यों, क्षेत्रीय संस्कृतियों और आषाओं से परिचय को सुगम बनाना चाहिए ताकि विद्यार्थी अपने विद्यार्थी जीवन में विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों को जान सके और अपने क्षेत्रीय भाइयो और बहनों से मेंलजोल बढ़ा सके।
- भाषा के भेद को मिटाने हेतु भारत के प्रत्येक जन-मानस में राष्ट्रीय भावना को भरने हेतु क्षेत्रीय सिनेमा एवं हिंदी सिनेमा के प्रचार एवं प्रसार के माध्यम का प्रयोग करना चाहिए।
- राष्ट्रीय एकता और अखंडता से संबंधित विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए जो ना केवल हिंदी भाषा में हो बल्कि क्षेत्रीय भाषाओं में भी हो।
- पुस्तकों के प्रकाशन में संस्कृति के साथ-साथ प्रादेशिक भाषाओं की अपार संस्कृति को भी स्थान दिया जाना चाहिए।
- इंटरनेट जैसी आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल करके विभिन्न भारतीय भाषाओं के अपार साहित्य से जुड़ी जानकारियों को साझा करने हेतु इस तकनीक का व्यापक रूप से प्रयोग करना चाहिए।
- गैर हिंदी भाषी राज्यों में, नियमों के माध्यम से हिंदी जैसी अद्भुत भाषा को थोपने के बजाए, हिंदी एवं संस्कृत का व्यापक प्रचार और प्रसार किया जाना चाहिए।
- राष्ट्रीय एकता की भावना को और ज्यादा मजबूत करने हेतु, युवा स्तर पर, उत्सवों और अन्य कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए। जिसमें युवा, क्षेत्रीय विभिन्नताओं को भूलकर अपने विचारों एवं संस्कृतियों का आदान-प्रदान करें और एक दूसरे को जानने का प्रयास करें जिससे राष्ट्रीय एकता और अखंडता की भावना को बल मिलेगा।
- एक भाषा के साहित्य का दूसरी भाषा में अनूदित साहित्य उपलब्ध कराना और भाषा के मध्य साहित्य का आदान-प्रदान अनिवार्य रूप से होना चाहिए।

*****

मेरी कुंभ यात्रा

मीना रानी,
लेखापरीक्षक

कुंभ स्नान की महत्ता तब ज्यादा बढ़ जाती है जब इसके समय काल 144 वर्षों में लगने वाला हो और यह मेंरे जीवन का पहला शाही कुंभ स्नान है। अतः मैं इस यात्रा के लिए बहुत ज्यादा ही उत्सुक हूँ। 14 जनवरी से शुरू गंगा संगम स्नान फाल्गुन अमावस्या को समाप्त होने पर जितना नहाने का उत्साह पहले दिन से हुआ, उतना ही आखिरी दिन और उसके बाद तक रहा।

प्रयागराज से झूंसी और झूंसी से संगम तक हमने पैदल ही यात्रा शुरू की। लगता था कि बहुत दूर पर न जाने किस आलौकिक शक्ति ने हमें प्रेरणा दी और हम न जाने कितने किमी. ही पैदल चल दिए और उसी तरह से वापस भी आए तथा सकुशल घर वापसी किए। तरह-तरह की अफवाहों से हमारा सामना हुआ और मन विचलित भी हुआ कि क्या रखा है नहाने में और जाने में। परंतु एक दृढ़ निश्चय के साथ हम लोग संगम तक पहुँच ही गए। वो कहा जाता है न कि, ऐसा कोई तीर्थ नहीं होता जहां छोटी-मोटी परेशानियाँ ना हो और ऐसा कोई धर्म नहीं जहाँ प्रभु का नाम ना हो।

स्नान आदि के बाद हम लोगों ने दान का सामान छूकर पंडित जी को दिया, गंगा मइया की आरती की, दीप जलाया, पुष्प प्रसाद चढ़ाया और आश्रम लौटकर लंगर का आनंद लिया और अपनी बेटी के साथ सकुशल घर वापसी की। 7 से 12 लाख श्रद्धालु प्रतिदिन आ रहे थे। 1 जनवरी से 26 जनवरी, 2025 तक प्रतिदिन 2 लाख से 2.59 लाख श्रद्धालु स्नान करने के लिए जुटते थे। इसकी महत्ता केवल भारत वर्ष में ही नहीं अपितु पूरे विश्व के लोग के लिए कितनी महत्वपूर्ण थी इसका आकलन ही कर पाना असंभव है।

कुंभ स्नान में आज भी कल्पवास करने की परम्परा वर्षों पुरानी संस्कृति चली आ रही है जिसमें श्रद्धालु अपना घर-द्वार छोड़कर कुछ समय तक (माह, हफ्ते, दिन) या जब तक स्नान लगा रहे तब तक लोग कल्पवास में स्नान, दान एवं गुरु-शिष्य परंपरा का आचरण करते हैं और भजन-कीर्तन करते हुए सात्विकता के साथ रहते हैं। इसमें गुरु चरण सेवा, भगवान की भक्ति, नाम- जप, दान-दक्षिणा आदि रोज ही होता है। एक अलग ही अध्यात्मिकता की अनुभूति हर बार हुई।

*****

पेयजल की समस्या

एम. रहमान खान,
डाटा इंट्री ऑपरेटर (बी.)

<u>महत्वपूर्ण तथ्य</u>

2021 में, 2 बिलियन से अधिक लोग जल - तनावग्रस्त देशों में रहते हैं, जो कि जलवायु परिवर्तन और जनसंख्या वृद्धि (1) के परिणामस्वरूप कुछ क्षेत्रों में और भी अधिक बढ़ने की उम्मीद है।

वर्ष 2022 में, वैश्विक स्तर पर कम से कम 1.7 बिलियन लोग मल से दूषित पेयजल स्रोत का उपयोग करते हैं। मल से दूषित होने के परिणामस्वरुप पेयजल में माइक्रोबियल संदूषण पेयजल सुरक्षा के लिए सबसे बड़ा जोखिम पैदा करता है।

सुरक्षित और पर्याप्त जन स्वच्छता के अभ्यास को सुगम बनाता है, जो न केवल दस्त संबंधी रोगों को रोकने के लिए, बल्कि तीव्र श्वसन संक्रमण और अनेक उपेक्षित उष्ण कटिबंधीय रोगों को रोकने के लिए एक प्रमुख उपाय है।

सूक्ष्मजीवीय रूप में दूषित पेयजल से डायरिया, हैजा, पेचिश, टाइफाइड और पोलियो जैसी बीमारियां फैल सकती है और अनुमान है कि इससे हर साल डायरिया से लगभग 5,05,000 लोगो की मृत्यु होती है।

2022 में, वैश्विक जनसंख्या का 73% (6 बिलियन लोग) सुरक्षित रूप से प्रबंधित पेयजल सेवा का उपयोग करेगी अर्थात, जो परिसर में स्थित हो, आवश्यकता पड़ने पर उपलब्ध हो, और संदूषण से मुक्त हो।

सुरक्षित और आसानी से उपलब्ध पानी सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है, चाहे इसका उपयोग पीने, घरेलू उपयोग, खाद्य उत्पादन या मनोरंजन के लिए किया जाए। बेहतर जल आपूर्ति और स्वच्छता, और जल संसाधनों का बेहतर प्रबंधन, देशों की आर्थिक वृद्धि को बढ़ावा दे सकता है और गरीबी को कम करने में बहुत योगदान दे सकता है। 2010 में, संयुक्त राष्ट्र महासभा ने स्पष्ट रूप से जल और स्वच्छता के मानव अधिकार को मान्यता दी। हर किसी को व्यक्तिगत और घरेलू उपयोग के लिए पर्याप्त, निरंतर, सुरक्षित, स्वीकार्य, शारीरिक रूप से सुलभ और किफायती जल का अधिकार है।

<u>पेयजल सेवाएं</u>

सतत विकास लक्ष्य 6.1 में सुरक्षित और किफायती पेयजल तक सार्वभौमिक और समान पहुंच की बात कही गई है। इस लक्ष्य को "सुरक्षित रूप से प्रबंधित पेयजल सेवाओं" के संकेतक के साथ ट्रैक किया जाता है- परिसर में स्थित एक बेहतर जल स्रोत से पीने का पानी, जब ज़रूरत हो तब उपलब्ध हो और मल और प्राथमिक रासायनिक संदूषण से मुक्त हो। 2022 में, 6 बिलियन लोगों ने सुरक्षित रूप से प्रबंधित पेयजल सेवाओं का उपयोग किया - यानि, उन्होंने परिसर में स्थित

बेहतर जल स्रोतों का उपयोग किया, जो ज़रूरत पड़ने पर उपलब्ध थे और संदूषण से मुक्त थे। 2022 में सुरक्षित रूप से प्रबंधित सेवाओं के बिना शेष 2.2 बिलियन लोगों में शामिल हैं:

- 1.5 बिलियन लोगों को *बुनियादी* सेवाएं प्राप्त होंगी, अर्थात 30 मिनट की यात्रा के भीतर उन्नत जल स्रोत उपलब्ध होगा;
- 292 मिलियन लोगों के पास *सीमित* सेवाएं हैं, या उन्नत जल स्रोत के कारण पानी इकट्ठा करने में 30 मिनट से अधिक समय लगता है;
- 296 मिलियन लोग असुरक्षित कुओं और झरनों से पानी लेते हैं; तथा
- 115 मिलियन लोग झीलों, तालाबों, नदियों और झरनों से अनुपचारित सतही जल एकत्र करते हैं।

तीव्र भौगोलिक, सामाजिक - सांस्कृतिक और आर्थिक असमानताएं न केवल ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच, बल्कि कस्बों और शहरों में भी बनी हुई हैं, जहां निम्न आय, अनौपचारिक या अवैध बस्तियों में रहने वाले लोगों को आमतौर पर अन्य निवासियों की तुलना में पेयजल के उन्नत स्रोतों तक कम पहुंच होती है।

<u>जल एवं स्वास्थ्य</u>

दूषित जल और खराब स्वच्छता हैजा, दस्त, पेचिश, हेपेटाइटिस ए, टाइफाइड और पोलियो जैसी बीमारियों के संचरण से जुड़ी हुई है। अनुपस्थित, अपर्याप्त या अनुचित तरीके से प्रबंधित जल और स्वच्छता सेवाएँ व्यक्तियों को रोके जा सकने वाले स्वास्थ्य जोखिमों के लिए उजागर करती हैं। यह विशेष रूप से स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं में होता है जहाँ पानी, स्वच्छता और स्वच्छता सेवाओं की कमी होने पर रोगियों और कर्मचारियों दोनों को संक्रमण और बीमारी के अतिरिक्त जोखिम में डाल दिया जाता है।

तीव्र देखभाल अस्पतालों में भर्ती प्रत्येक 100 रोगियों में से, उच्च आय वाले देशों (एच.आई.सी.) में 7 रोगी तथा निम्न व मध्यम आय वाले देशों (एल.एम.आई.सी.) में 15 रोगी अस्पताल में रहने के दौरान कम से कम एक स्वास्थ्य देखभाल से संबंधित संक्रमण से ग्रस्त हो जाते हैं।

शहरी, औद्योगिक और कृषि अपशिष्ट जल के अपर्याप्त प्रबंधन का मतलब है कि करोड़ों लोगों का पीने का पानी खतरनाक रूप से दूषित या रासायनिक रूप से प्रदूषित है। रसायनों की प्राकृतिक उपस्थिति, विशेष रूप से भूजल में, स्वास्थ्य के लिए भी महत्वपूर्ण हो सकती है, जिसमें आर्सेनिक और फ्लोराइड शामिल हैं, जबकि पीने के पानी के संपर्क में आने वाले जल आपूर्ति घटकों से लीचिंग के परिणामस्वरूप पीने के पानी में शीशा जैसे अन्य रसायन बढ़ सकते हैं।

अनुमान है कि असुरक्षित पेयजल, स्वच्छता और हाथ की स्वच्छता के कारण हर साल लगभग 1 मिलियन लोग डायरिया से मर जाते हैं। फिर भी डायरिया को काफी हद तक रोका जा सकता है, और अगर इन जोखिम कारकों पर ध्यान दिया जाए तो हर साल 5 साल से कम उम्र के 3,95,000 बच्चों की मौतों को टाला जा सकता है। जहां पानी आसानी से उपलब्ध नहीं है, वहां लोग हाथ धोना प्राथमिकता नहीं मानते, जिससे डायरिया और अन्य बीमारियों की संभावना बढ़ जाती है।

डायरिया दूषित भोजन और पानी से जुड़ी सबसे व्यापक रूप से ज्ञात बीमारी है, लेकिन इसके अन्य खतरे भी हैं। 2021 में, 251.4 मिलियन से अधिक लोगों को शिस्टोसोमियासिस के लिए निवारक उपचार की आवश्यकता थी - संक्रमित पानी के संपर्क में आने से परजीवी कृमियों के कारण होने वाली एक तीव्र और पुरानी बीमारी।

दुनियाँ के कई हिस्सों में, पानी में रहने वाले या प्रजनन करने वाले कीड़े डेंगू बुखार जैसी बीमारियों को फैलाते हैं। इनमें से कुछ कीड़े, जिन्हें वेक्टर के रूप में जाना जाता है, गंदे पानी के बजाय साफ पानी में प्रजनन करते हैं, और घरेलू पीने के पानी के कंटेनर प्रजनन स्थल के रूप में काम कर सकते हैं। पानी के भंडारण कंटेनरों को ढकने का सरल हस्तक्षेप वेक्टर प्रजनन को कम कर सकता है और घरेलू स्तर पर पानी के मल संदूषण को भी कम कर सकता है।

<u>आर्थिक एवं सामाजिक प्रभाव</u>

जब पानी बेहतर और अधिक सुलभ स्रोतों से आता है, तो लोग इसे शारीरिक रूप से इकट्ठा करने में कम समय और प्रयास लगाते हैं, जिसका अर्थ है कि वे अन्य तरीकों से उत्पादक हो सकते हैं। इससे व्यक्तिगत सुरक्षा भी बढ़ सकती है और पानी इकट्ठा करने और ले जाने के लिए लंबी या जोखिम भरी यात्रा करने की आवश्यकता कम होने से मस्कुलोस्केलेटल विकारों में कमी आ सकती है। बेहतर जल स्रोतों का मतलब स्वास्थ्य पर कम खर्च भी है, क्योंकि लोगों के बीमार पड़ने और चिकित्सा लागत वहन करने की संभावना कम होती है और वे आर्थिक रूप से उत्पादक बने रहने में बेहतर सक्षम होते हैं।

चूंकि बच्चों को जल - संबंधी बीमारियों का विशेष खतरा रहता है, इसलिए जल के उन्नत स्रोतों तक पहुंच से उनका स्वास्थ्य बेहतर हो सकता है, और परिणामस्वरूप उनकी स्कूल उपस्थिति भी बेहतर हो सकती है, जिसका उनके जीवन पर दीर्घकालिक सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

<u>चुनौतियां</u>

विश्व को 2030 तक बुनियादी पेयजल सेवाओं के साथ सार्वभौमिक कवरेज प्राप्त करने के लिए प्रगति की ऐतिहासिक दर को दोगुना करना होगा। सार्वभौमिक सुरक्षित रूप से प्रबंधित सेवाओं को प्राप्त करने के लिए 6 गुना वृद्धि की आवश्यकता होगी। जलवायु परिवर्तन, पानी की बढ़ती कमी, जनसंख्या वृद्धि, जनसांख्यिकीय परिवर्तन और शहरीकरण पहले से ही जल आपूर्ति प्रणालियों के लिए चुनौतियां पेश कर रहे हैं। 2 अरब से अधिक लोग जल-तनाव वाले देशों में रहते हैं, जिसके जलवायु परिवर्तन और जनसंख्या वृद्धि के परिणामस्वरूप कुछ क्षेत्रों में और बढ़ने की उम्मीद है। पानी, पोषक तत्वों या ऊर्जा को पुनः प्राप्त करने के लिए अपशिष्ट जल का पुन: उपयोग एक महत्वपूर्ण रणनीति बनती जा रही है। अपशिष्ट जल और कीचड़ का उपयोग विश्व स्तर पर व्यापक है; हालाँकि, इसका अधिकतर उपयोग अनौपचारिक रूप से और / या बिना पर्याप्त उपचार और अन्य नियंत्रणों के किया जाता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि मानव और पर्यावरणीय स्वास्थ्य की रक्षा की जाए

पीने के पानी और सिंचाई के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले जल स्रोतों के विकल्प विकसित होते रहेंगे, साथ ही भू-जल और अपशिष्ट जल सहित वैकल्पिक स्रोतों पर निर्भरता बढ़ती रहेगी।

जलवायु परिवर्तन के कारण वर्षा जल संचयन में अधिक उतार-चढ़ाव होगा। प्रावधान और गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए सभी जल संसाधनों के प्रबंधन में सुधार की आवश्यकता होगी।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) की प्रतिक्रिया

सार्वजनिक स्वास्थ्य और जल गुणवत्ता पर अंतर्राष्ट्रीय प्राधिकरण के रूप में, विश्व स्वास्थ्य संगठन जल-संबंधी बीमारियों की रोकथाम के लिए वैश्विक प्रयासों का नेतृत्व करता है, तथा सरकारों को स्वास्थ्य-आधारित लक्ष्यों और विनियमों के विकास पर सलाह देता है।

WHO जल गुणवत्ता दिशा-निर्देशों की एक श्रृंखला तैयार करता है, जिसमें पेयजल, अपशिष्ट जल का सुरक्षित उपयोग और मनोरंजक जल गुणवत्ता शामिल है। जल गुणवत्ता दिशा-निर्देश जोखिमों के प्रबंधन पर आधारित हैं, और 2004 से पेयजल गुणवत्ता के लिए दिशा-निर्देश सुरक्षित पेयजल के लिए रूपरेखा को बढ़ावा देते हैं। रूपरेखा स्वास्थ्य-आधारित लक्ष्यों की स्थापना, जल आपूर्तिकर्ताओं द्वारा जल सुरक्षा योजनाओं के विकास और कार्यान्वयन की सिफारिश करती है ताकि जलग्रहण क्षेत्र से उपभोक्ता तक जोखिमों की सबसे प्रभावी पहचान और प्रबंधन किया जा सके, और यह सुनिश्चित करने के लिए स्वतंत्र निगरानी की जा सके कि जल सुरक्षा योजनाएँ प्रभावी हैं और स्वास्थ्य-आधारित लक्ष्य पूरे हो रहे हैं।

पेयजल दिशा-निर्देश पृष्ठभूमि प्रकाशनों द्वारा समर्थित हैं जो दिशा-निर्देशों की सिफारिशों के लिए तकनीकी आधार प्रदान करते हैं। WHO व्यावहारिक मार्गदर्शन सामग्री के विकास और प्रत्यक्ष देश समर्थन के प्रावधान के माध्यम से पेयजल गुणवत्ता दिशा-निर्देशों को लागू करने के लिए देशों का समर्थन भी करता है। इसमें दिशा-निर्देशों में सिद्धांतों के अनुरूप स्थानीय रूप से प्रासंगिक पेयजल गुणवत्ता विनियमों का विकास, जल सुरक्षा योजनाओं का विकास, कार्यान्वयन और लेखा परीक्षा और निगरानी प्रथाओं को मजबूत करना शामिल है।

- पेयजल की गुणवत्ता के लिए दिशा-निर्देश
- जल सुरक्षा योजना संसाधन
- पेयजल गुणवत्ता विनियमन और मानक विकसित करना

डब्ल्यू.एच.ओ. पानी और स्वास्थ्य से संबंधित कई क्षेत्रों में यूनिसेफ के साथ मिलकर काम करता है, जिसमें स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं में पानी, सफाई और स्वच्छता शामिल है। 2015 में दोनों एजेंसियों ने संयुक्त रूप से वाश फिट (स्वास्थ्य सुविधा सुधार उपकरण के लिए जल और स्वच्छता) विकसित किया, जो जल सुरक्षा योजना दृष्टिकोण का एक अनुकूलन है। वाश फिट का उद्देश्य आकलन, जोखिम की प्राथमिकता और विशिष्ट, लक्षित कार्यों की परिभाषा के माध्यम से सुधार के निरंतर चक्र के माध्यम से निम्न और मध्यम आय वाले सेटिंग्स में छोटी, प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं का मार्गदर्शन करना है। 2023 की एक रिपोर्ट में व्यावहारिक कदमों का वर्णन किया गया है जो देश स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं में पानी, सफाई और स्वच्छता को बेहतर बनाने के लिए उठा सकते हैं।

*****

मोबाइल फोन के हानिकारक प्रभावः स्वास्थ्य जोखिम उजागर

समा खातून
पत्नी श्री एम. रहमान खान,
डाटा इंट्री ऑपरेटर (बी)

परिचय:-

मोबाइल फ़ोन अब हर जगह हैं, जिससे हम संवाद करने और जुड़ने का तरीका बदल रहे हैं। लेकिन उनके फ़ायदों के अलावा, वे कई स्वास्थ्य जोखिमों के साथ आते हैं। यह लेख मानव स्वास्थ्य पर मोबाइल फ़ोन के उपयोग के दस हानिकारक प्रभावों पर नज़र डालता है जिसमें तनाव का स्तर बढ़ना और नींद संबंधी विकार शामिल हैं। इन जोखिमों को समझना उन रणनीतियों को अपनाने के लिए महत्वपूर्ण है जो उन्हें कम करेंगी और मोबाइल फ़ोन के उपयोग से जुड़ी स्वस्थ आदतों को बढ़ावा देंगी। हमने देखा है कि सेल फ़ोन हमारी मानवता के साथ कैसे बातचीत करते हैं।

मानव स्वास्थ्य पर मोबाइल फोन के हानिकारक प्रभाव:-

मोबाइल फ़ोन तब से हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा बन गए हैं, जो हमें सुविधा प्रदान करते हैं और हमें ऐसे कनेक्ट रखते हैं जैसा पहले कभी संभव नहीं था। हालाँकि, उनकी सर्वव्यापकता ने लोगों की भलाई पर संभावित प्रतिकूल प्रभावों के बारे में चिंताएँ भी पैदा की हैं। इस खंड में हम सेल फ़ोन के उपयोग से उत्पन्न होने वाले 10 विशिष्ट हानिकारक प्रभावों पर विस्तार से चर्चा करेंगे, जिसमें उनके कारण बढ़ते तनाव के स्तर से लेकर नींद संबंधी विकारों तक के मुद्दों की व्याख्या की गई है। हम यहाँ प्रासंगिक कारणों का पता लगाते हैं कि ऐसे जोखिम उनके प्रभाव को कम करने के साथ-साथ फ़ोन एप्लिकेशन के बारे में स्वस्थ व्यवहार को बढ़ावा देने के लिए कुछ कदम उठाने के लिए महत्वपूर्ण क्यों हैं।

तनाव का स्तर बढ़ना

हैंडसेट से लगातार सूचनाएं, ई-मेंल और संदेश आते रहते हैं, जो इनसे उत्पन्न चिंता के स्तर को बढ़ाने में योगदान कर सकते हैं, जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति लगातार तनावग्रस्त हो सकता है, क्योंकि उसे लगातार किसी भी समय, किसी भी दिन, सप्ताह दर सप्ताह, महीने दर महीने, वर्षों तक बिना किसी चूक के अपना तत्काल फीडबैक प्राप्त करना होता है, यहां तक कि उसे आराम करने का भी मौका नहीं मिलता। इसके अलावा, स्मार्टफोन के माध्यम से करियर / व्यक्तिगत जीवन के ओवरलैप के संबंध में, यह दबाव के स्तर को और भी अधिक बढ़ा सकता है, जब व्यक्तियों को काम के माहौल से दूर रहना या ब्रेक लेना असंभव लगता है, जिससे अंततः क्रोनिक थकान सिंड्रोम हो जाता है। क्रोनिक तनाव के कई नकारात्मक स्वास्थ्य परिणाम होते हैं, जिनमें

हृदय रोग, कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली और मानसिक बीमारियां जैसे पैनिक अटैक, अवसाद आदि शामिल हैं।

शारीरिक गतिविधि में कमी:-

मोबाइल उपकरणों के अत्यधिक उपयोग ने सभी आयु वर्गों के लोगों में शारीरिक गतिविधि में कमी ला दी है। स्क्रीन टाइम विशेष रूप से आकर्षक है, लेकिन यह लंबे समय तक निष्क्रियता की विशेषता है, क्योंकि लोग सोशल नेटवर्क पर स्क्रॉल करने, गेम खेलने या अपने गैजेट पर फिल्में देखने में व्यस्त रहते हैं। यह निष्क्रिय जीवन-शैली कई स्वास्थ्य समस्याओं से जुड़ी है, जिसमें मोटापा, हृदय संबंधी विकार और हड्डी-मांसपेशियों से संबंधित समस्याएं शामिल हैं। इसके अलावा अत्यधिक स्क्रीन टाइम उस समय को ले सकता है, जिसका उपयोग व्यायाम या बाहरी मनोरंजन जैसी शारीरिक गतिविधियों में शामिल होने के लिए किया जा सकता था, जिससे स्थिति और भी खराब हो जाती है।

सामाजिक एकांत:-

जबकि मोबाइल फोन तुरंत संचार को संभव बनाते हैं, विरोधाभाषी रूप से वे लोगों के जीवन में एकांत और एकांत भी ला सकते हैं। अक्सर सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म या मैसेजिंग ऐप के माध्यम से ऑनलाइन संचार से आमने-सामने संपर्क कम हो सकता है जो अधिक सार्थक है। आभासी संचार पर निर्भरता रिश्तों के बीच एक खाई पैदा कर सकती है, जिससे प्रौद्योगिकी के माध्यम से संदेश भेजे जाने पर आवाज़ की टोन और चेहरे के भाव जैसी अंतरंगता की ताकत कम हो जाती है। फिर भी स्क्रीन को देखने में बहुत अधिक समय बिताना अकेलेपन की भावना को बढ़ाता है क्योंकि यह वास्तविक जीवन में होने वाली सामाजिक गतिविधियों को अकेलेपन से जुड़ी मृत्यु दर से बदल देता है।

नींद का बाधित पैटर्न:-

जो लोग सोने से पहले अपने मोबाइल फोन का इस्तेमाल करते हैं, उनके नींद के पैटर्न में गड़बड़ी पाई गई है और उनकी नींद की गुणवत्ता कम हो गई है, इसका कारण यह है कि स्क्रीन द्वारा उत्पादित नीली रोशनी नींद-जागने के चक्रों को विनियमित करने के लिए जिम्मेदार हार्मोन मेंलाटोनिन को बाधित करती है, जिससे उन्हें नींद आने में कठिनाई होती है और आराम नहीं मिल पाता है। यह लोगों को सोशल मीडिया अपडेट या मोबाइल डिवाइस पर होने वाले गहन गेमिंग सत्रों पर उत्तेजक सामग्री के संपर्क में लाकर सोने के समय में देरी करता है और नींद आने में देरी करता है।

आँखों पर तनाव और डिजिटल आई सिंड्रोम:-

लंबे समय तक मोबाइल फोन को घूरने से आंखों पर दबाव पड़ सकता है और डिजिटल आई सिंड्रोम या कंप्यूटर विजन सिंड्रोम हो सकता है। इससे आंखों में थकान, सूखी आंखें, सिरदर्द और धुंधली दृष्टि हो सकती है, क्योंकि लंबे समय तक डिजिटल डिस्प्ले पर ध्यान केंद्रित करने और पलक झपकने की दर कम हो जाती है। हालांकि, स्क्रीन द्वारा उत्पादित नीली रोशनी के लगातार संपर्क में रहने से रेटिना भी नष्ट हो सकता है, जिससे उम्र से संबंधित मैकुलर डिजनरेशन का खतरा बढ़ जाता है। नियमित ब्रेक लेने, स्क्रीन की चमक को समायोजित करने और नीली रोशनी वाले फिल्टर का उपयोग करने से आंखों की थकान को रोका जा सकता है और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के अत्यधिक उपयोग से होने वाले संभावित नकारात्मक प्रभावों को कम किया जा सकता है।

विकिरण जोखिम:-

सेल फोन से निकलने वाले विद्युत चुम्बकीय विकिरण के लंबे समय तक संपर्क में रहने से स्वास्थ्य पर पड़ने वाले संभावित प्रभावों के बारे में चिंता जताई गई है। हालाँकि, मोबाइल फोन के उपयोग को कैंसर के बढ़ते जोखिम से जोड़ने वाला कोई निश्चित वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है, हालाँकि कुछ अध्ययनों से पता चलता है कि लंबे समय तक उपयोग किए जाने पर यह कुछ कैंसर (विशेष रूप से मस्तिष्क ट्यूमर) से जुड़ा हो सकता है। कॉल करते समय फोन की निकटता और वर्षों तक संपर्क में रहने से कैंसर होने का खतरा माना जाता है, इसलिए इस मुद्दे पर आगे की जाँच आवश्यक है। उदाहरण के लिए, सेलफोन और शरीर के अंगों के बीच सीधे संपर्क से बचना समझदारी है, खासकर बात करते समय, या निर्णायक सबूत पेश किए जाने तक विकिरण जोखिम को कम करने के लिए उनके उपयोग को पूरी तरह से सीमित करें।

खराब मुद्रा और मस्कुलोस्केलेटल समस्याएं:-

सेल फोन का अत्यधिक उपयोग, खासकर जब गलत मुद्रा में रखा जाता है, तो अन्य मस्कुलोस्केलेटल समस्याओं के साथ-साथ खराब मुद्रा का कारण बन सकता है। किसी भी ऑप्टिकल डिवाइस जैसे कि टैबलेट और कंप्यूटर की तरह, स्मार्टफोन उपयोगकर्ता अक्सर अपने सिर को लंबे समय तक स्क्रीन की ओर झुकाते हैं, जिससे गर्दन, कंधों और ऊपरी पीठ की मांसपेशियों में खिंचाव होता है, जिससे असुविधा या दर्द से संबंधित समस्याएं होती हैं। सेल फोन के उपयोग में वृद्धि के कारण, इससे "टेक्स्ट नेक" के अधिक मामले सामने आए हैं, जिसे "टेक नेक" के रूप में भी जाना जाता है। इसके अलावा स्मार्टफोन पर बहुत अधिक अंगूठे की हरकतें जैसे कि टाइपिंग या किसी के ऐप के माध्यम से स्क्रॉल करना, कार्पल टनल सिंड्रोम के साथ टेंडोनाइटिस जैसी चोटों का कारण बन सकता है। एक अच्छी मुद्रा बनाए रखना और शरीर को स्ट्रेच करने और फिर से संरेखित करने के लिए नियमित ब्रेक लेना मोबाइल फोन के उपयोग से संबंधित मस्कुलोस्केलेटल समस्याओं की संभावना को काफी कम कर सकता है।

मानसिक स्वास्थ्य परप्रभाव:-

मोबाइल फोन की खास प्रकृति, साथ ही निरंतर कनेक्टिविटी, मानसिक स्वास्थ्य के लिए नकारात्मक परिणाम हो सकते हैं जिससे चिंता, अवसाद और अन्य मनोवैज्ञानिक समस्याएं हो सकती हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर एक आदर्श सार्वजनिक छवि बनाए रखने की आवश्यकता, साथ ही किसी भी डिजिटल इंटरैक्शन को मिस करने से बचने की आवश्यकता, विभिन्न लोगों में हीन भावना पैदा करती है। इसी तरह, अत्यधिक स्क्रीन समय नशे की लत या निर्भरता को ट्रिगर करने के लिए जाना जाता है क्योंकि कुछ लोगों को उनसे अलग होने पर अपने गैजेट को बंद करना मुश्किल लगता है और उन्हें वापसी के लक्षण भी हो सकते हैं। इसलिए, इस समस्या से निपटने के लिए, न केवल डिजिटल साक्षरता कौशल विकसित करने की आवश्यकता है, बल्कि स्वस्थ डिजिटल आदतों को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ मानवीय कनेक्शन और ऑफ़लाइन गतिविधियों को प्राथमिकता देने की भी आवश्यकता है।

संज्ञानात्मक गिरावट और बिगड़ी हुई स्मृति:-

मोबाइल फोन से लगातार सूचना और उत्तेजनाओं की धारा बहने के बाद सूचना का अतिभार और संज्ञानात्मक कार्य में गिरावट मन पर पड़ने वाले कुछ प्रभाव हैं। यह स्थापित हो चुका है कि सेल फोन द्वारा संभव की जाने वाली दैनिक गतिविधियों में से एक मल्टीटास्किंग उत्पादकता को कम करती है और अवधारणा एवं याद करने की क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है। इसके अलावा, इन डिजिटल इंटरैक्शन ने ध्यान अवधि को खंडित कर दिया है, जुड़ाव की छोटी अवधि और एकाग्रता की कमी ने गहरी सोच और अनुभूति में बाधा उत्पन्न की है। समय के साथ, सूचना एकत्र करने और कार्य पूरा करने के लिए मोबाइल उपकरणों पर निर्भरता से सोचने के कौशल में कमी आ सकती है, जिससे महत्वपूर्ण संकायों की हानि हो सकती है, जिसके परिणामस्वरूप मानसिक मामलों में बाहरी सहायता की आवश्यकता होती है। माइंडफुलनेस का पालन करने के साथ-साथ इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स से डिस्कनेक्ट करने का एक नियमित अभ्यास सेल फोन के अत्यधिक उपयोग के कारण मस्तिष्क की गिरावट को रोकते हुए संज्ञानात्मक क्षमताओं को बनाए रखने में सहायता कर सकता है।

लत और व्यवहार संबंधी विकार

मोबाइल फोन की लत, जिसे अक्सर नोमोफोबिया (मोबाइल फोन के बिना रहने का डर) के रूप में जाना जाता है, विशेष रूप से युवा जनसांख्यिकी के बीच एक महत्वपूर्ण चिंता के रूप में उभरी है। मोबाइल उपकरणों की लत प्रकृति, जो नोटिफ़िकेशन जाँचने और ऑनलाइन सामग्री से जुड़ने की बाध्यकारी इच्छा की विशेषता है, दैनिक कामकाज को बाधित कर सकती है और सामाजिक और व्यावसायिक ज़िम्मेदारियों को बिगाड़ सकती है। जब व्यक्ति अपने फ़ोन तक पहुँचने

में असमर्थ होता है, तो उसे चिंता और बेचैनी जैसे लक्षण दिखाई दे सकते हैं, जो लत के व्यवहार को और मज़बूत करते हैं। इसके अलावा, अत्यधिक स्क्रीन समय और डिजिटल उत्तेजना को ध्यान घाटे की सक्रियता विकार (ADHD) और अन्य व्यवहार संबंधी विकारों से जोड़ा गया है, विशेष रूप से बच्चों और किशोरों में। उपयोग की सीमाएँ निर्धारित करना, डिजिटल माइंडफुलनेस का अभ्यास करना और पेशेवर सहायता प्राप्त करना जैसी रणनीतियों को लागू करना व्यवहार और स्वास्थ्य पर मोबाइल फ़ोन की लत के प्रतिकूल प्रभावों को कम करने में मदद कर सकता है।

निष्कर्ष:-

निष्कर्ष में, मानव स्वास्थ्य पर मोबाइल फोन के 10 हानिकारक प्रभाव कड़ी मेंहनत और सावधान आदतों की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं। तनाव के बढ़ते स्तर से लेकर नींद के पैटर्न में व्यवधान और संभावित विकिरण जोखिम तक, जोखिम विविध और महत्वपूर्ण हैं। इन प्रभावों को कम करने के लिए, स्क्रीन समय को सीमित करने, डिजिटल डिटॉक्स का अभ्यास करने और वास्तविक दुनियाँ की बातचीत को प्राथमिकता देने जैसी रणनीतियों को लागू करने पर विचार करें। इसके अतिरिक्त, उचित मुद्रा बनाए रखना, डिवाइस के उपयोग के लिए सीमाएँ निर्धारित करना और नींद की स्वच्छता को प्राथमिकता देना महत्वपूर्ण है। इन उपायों को अपनाकर, व्यक्ति स्वस्थ मोबाइल फोन की आदतों को बढ़ावा दे सकते हैं और अपने शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की रक्षा कर सकते हैं।

परिवेश

राम शबद लाल,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

हरियाली से भरा धरा का अंग,
प्रकृति का सौंदर्य, जीवन का रंग।
पेड़-पौधे, फूल और पत्तियाँ,
जीवन को देते हैं नई ऊचाईयाँ।

नदियाँ बहती हैं, झीलें चमकती,
प्रकृति की गोद में जीवन खिलता।
पक्षियों की चहचहाहट, हवा की मस्ती,
परिवेश में जीवन की सच्ची मस्ती।

परिवेश हमारा साथी है,
जो हमें जीवन देता है।
हमें इसकी रक्षा करनी है,
आने वाली पीढ़ियों के लिए बचानी है।

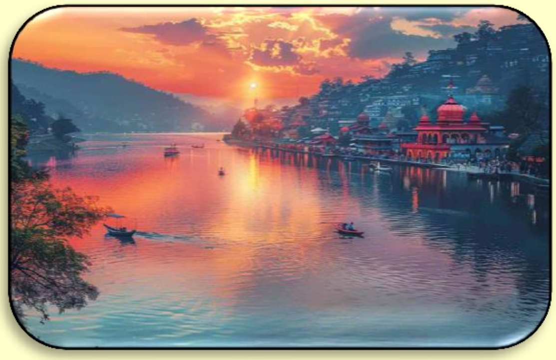

*****

मेरी मेघालय यात्रा

अंशुमान शर्मा,
पुत्र श्री अशोक कुमार,
सहायक निदेशक (राजभाषा)

मैं अपनी गर्मियों की छुट्टियों में अपने पापा के साथ वर्ष, 2024 में मेघालय घूमने गया था। मेघालय भारत का एक अभिन्न राज्य है। इसकी राजधानी शिलांग है। मैं और मेरे पापा रेलगाड़ी से पहले गुवाहाटी रेलवे स्टेशन गये। गुवाहाटी असम का एक प्रमुख शहर है। असम में काजीरंगा नेशनल पार्क है, जो गैंडा के लिए प्रसिद्ध है। मैं और मेरे पापा एक गाड़ी से शिलोंग जा रहे थे। रास्ता बहुत ऊबड़-खाबड़ और घुमावदार था। रास्ता बहुत लंबा था इसलिए हम लोग एक ढाबे पर रुके थे। रात को मैं और मेरे पापा ने एक होटल बुक किया। सुबह हुई तो हम लोग सेवन सिस्टर्स वाटर फॉल्स देखने चले गए। सेवन सिस्टर्स वाटर फाल्स भारत के मेंघालय में नोह्सिंगिथियांग फॉल्स है, जिसे चूना पत्थर की चट्टानों पर बहनें वाले अपने सात खंडों के कारण सेवन सिस्टर्स फॉल्स के रूप में भी जाना जाता है। यह प्रभावशाली, मौसमी झरना, विशेष रूप से मानसून के दौरान, एक प्रमुख पर्यटन आकर्षण है, और भारत के सात पूर्वोत्तर राज्यों का प्रतीक है। एक और "सेवन सिस्टर्स वाटरफॉल" नॉर्वे में गेइरंगेरफजॉर्ड के भीतर स्थित है। यहाँ पर मैने सात झरनों को एक साथ देखा था। जब मैं होटल जा रहा था तो मैंने एक पार्क देखा। मै वहाँ थोड़ी देर रुक गया। होटल पहुचने के बाद में सो गया। सुबह हुई तो मैंनेस्नान किया। फिर पापा चार समोसे और चटनी ले कर आए और मैंने नास्ता कर लिया। फिर हम लोग चेरापूंजी टैक्सी से घूमने चले गये। चेरापूंजी, मेंघालय के खासी पहाड़ियों में स्थित एक छोटा सा गांव व कस्बा है, जिसे दुनियाँ के सबसे अधिक वर्षा वाले स्थानों में गिना जाता है। यहाँ का जीवित जड़ पुल स्थानीय खासी जनजाति द्वारा पेड़ों की जड़ों से बनाया जाता है– यह प्रकृति और मानव कौशल का अद्भुत संगम है। चेरापूंजी में सात बहन झरना, नोहकलिकाई जलप्रपात जैसे झरनें पर्यटकों को मंत्रमुग्ध कर देते हैं। यहाँ की गुफाएँ, जैसे मौसमाई गुफा और हरियाली से ढकी घाटियाँ इसे प्रकृति प्रेमियों के लिए स्वर्ग बना देती है।

खासी संस्कृति से भरपूर, चेरापूंजी मेंनोंगक्रेम नृत्य उत्सव जैसे पारंपरिक आयोजन होते हैं जो इसकी सांस्कृतिक विरासत को दर्शाते हैं। जब मैंने यहां का नाजारा देखा तो मैं हक्का- बक्का रह गया। तो इस प्रकार मैंने अपने परिवार के साथ दो बार मेंघालय घूमने का रोमांचित अनुभव प्राप्त किया। धन्यवाद।

*****

आधुनिक जीवनशैली

जनार्दन मिश्र,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

आधुनिकता आज की हकीकत या कल का फसाना,
इन चौंधियाते, चमकते पर्दों में छिपा है क्या,
सच का धुंधला सा ओझल होता हुआ बहाना।
हर हाथ में मोबाइल, हर पल में रफ्तार,
रिश्तों के बीच बढ़ती हुई अदृश्य दीवार,
आधुनिकता से तो हमारी जिंदगी की गति तेज हो गई है,
पर क्या कहें हम, जीने की तृष्णा निस्तेज हो गई है।
जहाँ रिश्ते एक ओर ऑनलाइन स्टेटस तक सीमित हो गए हैं,
वहीं जज्बात भी साइलेंट मोड़ पर गुमसुम हो गए हैं।
घर तो वही है पर बातों का रंग न जाने कहां खो गया,
मुस्कुराहटें स्क्रीन पर रह गईं, आंलिगन कहीं खो गया।
ज्ञान की गंगा चारो-ओर हैं, पर बोध का सूखा,
बढ़ती ऊँचाई में भीतर का अकेलापन रूखा,
तू दिखती है उन्नति की सीढ़ी जैसी,
पर कहीं-कहीं तू गिरावट की भी कहानी है।
तू है समय की मांग यह हम जानते हैं,
पर तेरे पीछे न जाने क्या-क्या खो गया, यह भी पहचानतें हैं।
तू है तो जरूरी है, पर क्या तू ही सबकुछ है,
यह बस भ्रमित करने वाली मृग मरीचिका।
इसलिए आधुनिकता जीवन के लिए एक सौगात है,
पर ध्यान रहे संतुलन होना भी साथ है।

*****

धर्म और जाति

अनुश्री विश्वकर्मा,

वरिष्ठ लेखापरीक्षक

जैसा कि हम सभी यह जानते हैं कि हमारा देश भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है। यहाँ पर अनेक धर्मों को मानने वाले लोग रहते हैं। सभी धर्मों के अपने-अपने रीति-रिवाज एवं परम्पराएँ हैं। धर्म के नाम पर जितनी स्वंत्रता भारत में है उतनी स्वतंत्रता विश्व में किसी भी देश में नहीं है। हमें लग रहा है कि जितनी आजादी से अपने धर्मों का निर्वाह करने की इजाजत भारत में लोगों को है, उतनी आजादी शायद ही किसी देश में है। यहाँ पर हर धर्म के लोग अपने-अपने रीति-रिवाज एवं परम्पराओं के अनुसार अपना जीवन-यापन करते हैं। धर्म के नाम स्वतंत्रता देकर भारत विश्व में अपनी एक अलग ही पहचान बना चुका है। हमें यह भी पता है कि हमारे समाज में भाँति-भाँति के सोच वाले लोग भी रहते हैं जिनका धर्म के नाम पर अलग ही खेल चलता रहता है। ऐसे लोग रहते हैं धर्म के नाम पर मिली इस स्वतंत्रता को अपनी जागीर समझते हैं एवं धर्म का सहारा लेकर ऐसे-ऐसे आडम्बर समाज में फैलाते रहते हैं जिससे आए दिन कुछ ना कुछ गलत होता रहता है। आए दिन हम समाचार पत्रों, टेलीविजन आदि के माध्यम से सुनते रहते हैं कि धर्म के नाम पर इसने ऐसा किया उसने वैसा किया। आश्चर्य की बात तो यह है कि धर्म के नाम पर खेल खेलने वाले ये लोग तनिक भी संकोच नहीं करते हैं। अपने द्वारा फैलाए गए आडंम्बर को अपना गुरूर समझते हैं। अगर इनको कोई समझाने की कोशिश करता भी है तो ये उसे ही गलत साबित कर देते हैं।

हमारे अपने घर में भी धर्म के कुछ ठेकेदार रहते हैं जो आए दिन धर्म के नाम पर घर-परिवार के सदस्यों को प्रवचन देते रहते हैं। अगर घर में कोई धार्मिक अनुष्ठान या कार्यक्रम आदि चल रहा हो या होने वाला हो तो ये ठेकेदार उसमें सलाह देने वालों की कतार में सबसे आगे रहते हैं। मजाल है कि इनके रहते घर का कोई सदस्य कुछ बोल पाए। इनकों घर-परिवार के सदस्यों को अपनी उँगलियों पर नचाना बहुत ही अच्छा लगता है। अपने द्वारा किए गए इस कार्य को ये धर्म के ठेकेदार बढ़-चढ़कर बोलते भी हैं। जैसे देखो, मैंने कहा था कि ऐसा करो तो सब सही होगा। वैसा करो तो सब सही होगा। अगर उस धार्मिक अनुष्ठान में या कार्यक्रम में कोई त्रुटि हो जाए तो भी ये उसका दोष परिवार के किसी अन्य सदस्य पर लगा देते हैं और अपनी गलतियों को छुपाने के लिए स्वर ऊँचा करके सबको डराने-धमकाने लगते हैं। मतलब अगर कुछ सही हो तो इनकी वाह-वाही और जहाँ कुछ गलत हो तो ये तुरंत साधु बन जाते हैं। परिवार के सदस्य भी सोचते हैं कि कैसे आदमी से पाला पड़ गया है। लेकिन वो संकोचवश कुछ कर भी नहीं पाते हैं। वो हमारे यहाँ एक कहावत है

ना कि कीचड़ में पत्थर फेकोंगे तो उसके छीटे अपने ऊपर भी आएंगे। बस यही सोच के सब खामोश हो जाते हैं औऱ ये धर्म के ठेकेदार अपने-आपको को महान समझने लगते हैं।

धर्म के नाम पर खुद को महान समझने वाले ये लोग जातिगत भेद-भाव भी बहुत करते हैं। कौन सी जाति श्रेष्ठ है और कौन सी जाति निम्न है, इन सब में इनकी बहुत ही रूचि होती है। लेकिन सबसे बड़ा आश्चर्य हमें तब होता है जब हम इनको धर्म के विरुद्ध कार्य करते देखते हैं। जीवन में कभी-कभी ऐसा भी अवसर आता है जब हम अपनी आँखों से इन धर्म के नाम पर ठेकेदारों को उत्पात करते देखते हैं और जब हम इनसे पुछने लगते हैं तो उसका उत्तर बड़ी सफाई से देते हुए खुद को बचाने की कोशिश करने लगते हैं। जैसा कि हमने अपनी पढ़ाई के दौरान जाना है कि प्राचीन काल में हमारे यहाँ वर्ण व्यवस्था का प्रावधान था। समाज के लोगों को चार वर्णों में बांटा गया था- ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य एवं शुद्र। ये वर्ण व्यवस्था उनके द्वारा किए जाने वाले कार्यों के आधार पर बनायी गयी थी। जो जिस वर्ण का होता था उसका कार्य भी वैसा ही होता था। किंतु आज ऐसा नहीं है। चाहे घर-परिवार हो, समाज हो अथवा कोई राज्य हो, सब जगह सुविधानुसार धर्म का प्रावधान लागू किया जा रहा है। धर्म का वास्तविक पर्याय क्या होता है इससे किसी को कोई लेना-देना नहीं है। जिस कार्य से हमें फायदा हो वो हमारे लिए सही है औऱ जिस कार्य से हमें हानि हो वो हमारे लिए बिल्कुल गलत है।

आज हर कोई यह चाहता है कि जो भी धार्मिक रीति-रिवाज एवं परम्पराएँ आदि हों वो सब मेरी सुविधानुसार हों। यदि किसी धार्मिक रीति-रिवाज एवं परम्परा से व्यक्ति के दैनिक क्रिया-कलाप में बाधा आती है तो वो तुरंत उसमें परिवर्तन कर देता है और अपने अनुसार नियम बना देता है लेकिन जैसे ही बात किसी अन्य पर लागू होने लगे तो यही धर्म और जाति के नाम पर ठेकेदारी करने वाला व्यक्ति सोचता है कि सामने वाला पूर्णतः धर्म का पालन क्यों नहीं किया। ऐसे लोगों को किसी के हालात एवं परिस्थिति से कोई लेना-देना नहीं होता है, ये सिर्फ स्वयं का फायदा देखते हैं। अब बात आती है कि इसमें इस प्रकार के लोगों का दोष है कि धर्म के नाम पर हमारे पूर्वजों द्वारा बनायी गई रीति-रिवाज या परम्पराओं का दोष है। तो मैं यह मानती हूँ कि कोई भी धर्म गलत नहीं होता है और ना ही उस धर्म के रीति-रिवाज एवं परम्पराएं ही गलत होती हैं। अगर इसमें किसी का दोष तो वो हमारा है कि हम अपने धर्म, रीति-रिवाज और परम्पराओं का कैसे सदुपयोग करते हैं। धर्म किसी का बुरा नहीं होता है और ना ही कोई जाति बुरी होती है। धर्म और जाति के नाम पर आडंबर फैलाने वाले लोग गलत होते हैं जो अपनी सुविधानुसार इनमें परिवर्तन कर धर्म और जाति को बदनाम करते हैं।

कई बार शुरुआत नई की है

डॉ. प्रदीप अग्रवाल,
लेखापरीक्षक

कई बार शुरुआत नई की है,
कई बार यूँ हीं नाकाम हुआ हूँ।
नहीं है आसान कोशिश कर लो
यूं ही नहीं बदनाम हुआ हूँ।

आसानी से कहते हैं सब,
ऐसी क्या बड़ी बात है।
सबसे अनुरोध करूंगा मैं,
आकर देखो मेंरे मन के क्या हालात हैं।

आकर देखो कैसे मै,
हर रोज ही खुद से लड़ता हूँ।
एक जीत की आस में खुद से मैं,
हर रोज ही हारता रहता हूँ।

करता हूँ कोशिश कहीं मुझे,
मिल जाए कोई राह नई।
अपने इस विचलित मन को मैं,
कर सकूँ नियंत्रित काश कभी।

हर रात को सोने से पहले,
कहता हूँ कल बेहतर होगा।
करता हूँ आशा रोज यही,
शायद नया कोई अवसर होगा।

शायद समझा हूँ कुछ हद तक,
क्या अर्जुन को समझाया था।
शत्रु प्रबल तो वहाँ भी था,
पर अर्जुन पर श्रीकृष्ण का साया था।

पर छोड़ के आशा का दामन,
होने वाला कुछ काम नहीं।
चलो चलता हूँ फिर लड़ता हूँ,
शायद अभी आराम नहीं।

करता हूँ एक शुरूआत नई,
एक और मैं कोशिश करता हूँ।
हो शायद सच जो सुना था मैंने,
कोशिश करने वालों की हार नहीं।

*****

मछली की व्यथा

डॉ. प्रदीप अग्रवाल,
लेखापरीक्षक

कहने को तो सबको जीवन एक सा मिलता है,
फिर भी न जाने क्यों इस जगह मुझे अच्छा नहीं लगता है।

बंदिशें इतनी है कि मैं स्वछंद घूम भी नहीं सकती,
मेंरी हवा, पानी और खाना भी इंसानों के हिसाब से चलता है।

साथी भी दो चार ही हैं वो भी आते जाते हैं,
कोई अपना सा लगने वाला यहाँ नहीं मिलता है।

काश...काश मिला होता मुझे भी समंदर में अपना घर,
होती फिर कितनी मौज मेंरी उन गहराइयों पर।

संगी होते, साथी होते, होता अपना घर,
हवा, पानी और खाने की नहीं होती कोई फिकर।

इंसान अपनी खुशियों के लिए हमें क्यों कैद करता है,
जिंदगी हमारी एक छोटे से शीशे में बंद कर रखता है।

हो कुछ ऐसा कमाल कि फिर हम सा कोई न जाल में आए,
हम सब भी अपने समंदर में जिंदगी खुशियों के साथ बिताएँ।

*****

समय

डॉ. संध्या सिंघल,
पत्नी श्री समीर कुमार सिंघल,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

नहीं ठहरता समय कहीं पर,
ऋतुओं का आना जाना है।
जब सत्य का सूरज तपिश बढ़ाए,
रिश्तों में गर्माहत भर लेना।
प्रीत की धारा पड़े धरा पर,
मन का पाप मिटा लेना।
खुशियों की ठंडी पवन चले,
तब तन-मन पुलकित कर लेना।
जब चारों दिशाओं में ऋतुराज बसंत दिखे,
जीवन में खुशहाली भर लेना।
नैसर्गिक है, परिवर्तन यह,
जीवन के रंग निराले हैं,
सुख-दुख में समभाव लिए,
मन को स्थिर कर लेना।

*****

राजभाषा स्वर्ण जयंती समारोह- 2025

अशोक कुमार,
सहायक निदेशक (राजभाषा)

राजभाषा विभाग के पचास वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में भारत सरकार, गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग ने भारत के दो महत्वपूर्ण नगरों में अखिल भारतीय राजभाषा स्वर्ण जयंती समारोह, 2025 का भव्य आयोजन किया गया। प्रथम समारोह नई दिल्ली स्थित भारत मंडपम में 26.06.2025 को भव्य आयोजन किया गया, जहां पर देश के कोने- कोने से केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों / मंत्रालयों / विभागों से प्रतिनिधियों ने अपनी प्रतिभागिता सुनिश्चित की।

मैंने दिनांक 24.06.2025 को सायं के समय नई दिल्ली के लिए यात्रा प्रारंभ की तथा उक्त समारोह में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

यह सरकार की बेहतरीन पहल है जिसमें इस समारोह में गृह मंत्री, संसदीय मंत्री आदि राजभाषा को आगे प्रगति पर ले जाने के लिए मंच के माध्यम से वक्तव्य दिए एवं विभिन्न विभागों / बैंको आदि की पुस्तकों का विमोचन किया गया।

तत्पश्चात दिनांक 11.07.2025 को द्वितीय राजभाषा स्वर्ण जयंती समारोह, 2005 का आयोजन अखिल भारतीय स्तर पर हैदराबाद में किया गया जिसमें देश के कोने- कोने से विभिन्न कार्यालयों से प्रतिनिधियों की उपस्थिति दर्ज हुई।

इस स्वर्ण जयंती समारोह के शुभ अवसर पर मुझे भी कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर से प्रतिनिधि के रूप में जाने का अवसर मिला था। दिनांक 08.07.2025 को प्रातः 4.45 पर ट्रेन द्वारा झांसी के लिए रवाना हुआ। तत्पश्चात 09-07-2025 को प्रातः 12.30 पर झांसी रेलवे स्टेशन से सिकन्दराबाद के लिए राजधानी एक्सप्रेस से रवाना हुआ तत्पश्चात सिकन्दराबाद रेलवे स्टेशन पहुंच कर लगभग एक घंटे खोजने के बाद प्राइवेट गेस्ट हाउस में आश्रय लिया एवं थकान दूर की।

दिनांक 10.07.2025 को राजभाषा स्वर्ण जयंती समारोह में प्रतिभागिता हेतु निमंत्रण पत्र एवं अन्य लेखन सामग्री आदि का किट प्राप्त करने हेतु जी.एम.सी. बालयोगी इंडोर स्टेडियम गच्चीबावली, हैदराबाद पहुंचा, जहां पर उक्त सामग्री प्राप्तोपरान्त अपने अन्य समकक्षों एवं सहकर्मियों के साथ हैदराबाद का ऐतिहासिक किला गोलकुंडा गया, जहां मैने देखा कि उस गोलकुंडा के सर्वोच्च शिखर पर एक भव्य हिंदू देवी जी का मंदिर है जिनको प्रसन्न करने हेतु वर्ष में एक माह तक मेंला लगता है। सौभाग्यवश मुझे उस मेंले का लुत्फ उठाने का अवसर मिला। गोलकुंड़ा के सर्वोच्च शिखर तक चढ़ने पर हैदराबाद का संपूर्ण नगर एवं उनकी इमारतों का नजारा नजर आता है तथा उसी शिखर से सारे शहर का अवलोकन किया जा सकता है। उस गोलकुंडा के मेंले में चार क्षेत्रीय युवतियों जो कि भारतीय परिधान में सुसज्जित थी उनसे साक्षात्कार हुआ। साक्षात्कार की भाषा अप्रत्याशित हिंदी थी। आश्चर्य की बात यह है कि हैदराबाद 'ग' क्षेत्र में आता है तथापि वे

क्षेत्रीय युवतियां हिंदी का भव्य प्रदर्शन कर रही थी। इससे यह आंकलन लगाया जा सकता है कि हिंदी का विकास देश के कोने कोने में हो रहा है और 'ग' क्षेत्र के हिंदी प्रेमियों से 'क' क्षेत्र के नागरिकों को सीख लेनी चाहिए कि हमें हिंदी गर्व से बोलनी चाहिए तथा शत-प्रतिशत कार्य हिंदी में करने हेतु हिचकना नही है।

इसके अतिरिक्त उस ऐतिहासिक इमारत के भ्रमण के पश्चात अल्प समय में हुसैन सागर तथा हैदराबाद की प्रसिद्ध इमारत चार मीनार एवं अन्य मंदिरों का दर्शन किए गए।

इस प्रकार राजभाषा विभाग के स्वर्ण जयंती समारोह एवं प्रतिवर्ष अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों का आयोजन देश के विभिन्न नगरों में होता रहता है जिससे हिंदी का विकास देश के जन जन तक पहुंचता रहता है तथा हमें भी उस नगर के लोगो से साक्षात्कार करने का अवसर मिलता रहता है।

जय हिंदी जय भारत

*****

अहमियत

हरि गोविंद,
एम.टी.एस.

कहा जाता है कि किसी भी व्यक्ति या वस्तु की अहमियत मिलने से पहले और खोने के बाद ही पता चलती है। धरती पर वैसे तो ईश्वर ने अनेक प्रकार के जीवों की रचना की है किंतु उन सभी जीवों में जो सबसे बुद्धिमान जीव की रचना ईश्वर द्वारा की गई वो है इंसान और यही प्राणी सबसे ज्यादा अपने दिमाग का प्रयोग करता है। या यू कहें कि कभी-कभी तो इंसान इस हद तक दिमाग का प्रयोग करने लगता है कि उसे अपने आस-पास क्या हो रहा है या उसके द्वारा किए गए कार्य या लिए गए निर्णयों का प्रभाव कहां तक हो सकता है इससे वो बिल्कुल मतलब नहीं रखता है। लेकिन जब परिणाम सामने आता है तो उसे एहसास होता है कि उसने क्या किया है।

चाहे घर हो या समाज इंसान हर जगह सिर्फ अपने हित के बारे में सोचता है। वर्तमान में उसके पास जो भी है वो उससे संतुष्ठ नहीं होता है। ईश्वर ने जो भी सुख-सुविधाएँ इंसान को प्रदान की है उसके लिए ईश्वर को धन्यवाद देने के बजाए जो उसके पास नहीं होता है उसके लिए सोचता रहता है और इसके लिए कभी स्वयं को तो कभी घर-परिवार के सदस्यों को या कभी समाज के लोगों को कोसता रहता है। लेकिन जब उसके स्वभाव के कारण एक-एक करके उसके जीवन से चीजें दूर होने लगती है तब उसे एहसास होता है कि उसने क्या खो दिया है। लेकिन वो एक कहावत है ना कि अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।

बुद्धि और विवेक के मामले मनुष्य के जैसा पृथ्वी पर कोई नहीं है। जितनी सुख-सुविधाएँ ईश्वर के रहमो-करम से इंसान को मिली हैं उतना पृथ्वी के किसी जीव के पास नहीं है फिर भी अगर सबसे ज्यादा कोई जीव पृथ्वी पर दुःखी है तो वो है इंसान। सबसे ज्यादा किसी जीव को ईश्वर से शिकायत है तो वो है इंसान। हर वक्त बस यही रोना रहता इंसान का मेंरे पास ये नहीं, मेंरे पास वो नहीं है। दूसरों को देख कर सदैव मन में अनेक प्रकार के विचारों का निर्माण करता रहता है। बस इसी वजह से ईश्वर ने जो दिया है उसका ना तो खुशहाल मन से सदुपयोग कर पाता है और ना ही अपने जीवन में लोगों और किसी वस्तु को महत्व देता है।

इसी पर एक कहावत कही गई है कि इंसान स्वयं के दुःखों से नहीं दूसरों के सुखों से ज्यादा दुःखी रहता है। और इस चक्कर में वो ना तो जीवन में अपने परिवार के किसी सदस्य को महत्व देता है और ना ही अपने द्वारा संजोयी गई किसी भी वस्तु का आनंद उठा पाता है। लेकिन कहा जाता है कि इंसान की जिंदगी में चाहे कोई व्यक्ति हो या वस्तु वो बहुत ही कीमती होती है और अगर आप उनकी ईज्जत नहीं करेंगे तो वो ईश्वर द्वारा आपसे छीन लिया जाएगा। क्योंकि हद से ज्यादा दुरुपयोग किसी भी चीज की कभी भी अच्छी नहीं होती है।

पृथ्वी पर हर इंसान सदैव खुद को श्रेष्ठ और औरों को तुच्छ समझता है। उसे लगता है कि वो जो बोलता है, जो सोचता है और जो करता है वही सही है और बाकी सब गलत। लेकिन ऐसा कैसे हो सकता है? एक ही इंसान हर जगह सही कैसे हो सकता है। जैसा कि हम समझते हैं कि

सर्वगुण संपन्न और सत्य केवल एक ईश्वर ही है बाकी कोई नहीं। किंतु मैं हीं केवल सही हूँ, अपने इसी अहंकार के चलते इंसान अपने जीवन में बहुत कुछ खो देता है और जब इंसान का जीवन दूर हो जाता है तो उसके लिए इंसान रोना-धोना शुरु कर देता है। अब यहाँ पर एक प्रश्न यह उठता है कि जब तक वो इंसान या वस्तु आपके जीवन में था तब तक आपने उसे कितना महत्व दिया? आपकी नज़र में उसकी कितनी अहमियत थी। जब वो आपके पास था तब तो आपने उसकी कदर नहीं की और जब वो आपसे दूर हो गया तब वो आपके लिए इतना ज्यादा महत्वपूर्ण हो गया।

कुछ लोगों को तो सबकुछ खोने के बाद भी कोई असर नहीं होता है। अपने स्वभाव की वजह से वो अपने जीवन में सबकुछ दाव पर लगा देते हैं फिर ऐसे बात करते हैं जैसे कि उन्होंने कुछ किया ही नहीं है। उनकी कोई गलती ही नहीं है। जो चला गया उसी की सारी गलती थी। ऐसे लोग अपने जीवन में ना तो किसी व्यक्ति को जीते जी अहमियत देते हैं और ना ही उसके चले जाने के बाद क्योंकि इनका हमेंशा सही होने का गुरूर इनके सोचने-समझने की शक्ति को समाप्त कर देता है। अब ऐसे लोगों का क्या ही किया जा सकता है?

कभी-कभी लगता है कि ईश्वर भी ऊपर से इंसानों के इस बर्ताव को जब देखता होगा तो हंसता होगा और सोचता होगा कि मैंने क्या सोच कर इंसान जैसे बुद्धिमान जीव बनाए और ये पृथ्वी पर क्या कर रहा है। जो मैंने इसे दिया उसकी कदर नहीं किया और जो नहीं दिया उसे पाने के लिए ये सारी हदें पार कर रहा है। लगता है इससे सबकुछ वापस लेना ही पड़ेगा, और धीरे-धीरे ईश्वर इंसान के जीवन से हर वो चीज या हर उस व्यक्ति को दूर कर देता है जिसकी इंसान की नज़र में अहमियत नहीं होती है।

इसलिए कहा जाता है कि ईश्वर के द्वारा हमें व्यक्ति और वस्तु के रूप में जो भी कुछ प्रदान किया गया है उसकी ईज्जत करनी चाहिए वरना बाद में पछताने के अलावा इंसान के पास और कोई विकल्प नहीं रह जाता है। जो आपके पास है उसकी अहमियत अपने जीवन में इंसान को सदैव सबसे ऊपर रखनी चाहिए। खुशहाल जीवन जीने का इससे बड़ा कोई भी महामंत्र नहीं है। जो इंसान अपने पास के व्यक्ति और वस्तु की ईज्जत नहीं करता है और सदैव दूसरों को देखकर दुःखी रहता है उसे पछतावे के अलावा कुछ भी नहीं मिलता है। जो भी कुछ हमारे पास है वही सबसे कीमती है बाकी सब मिथ्या है। क्योंकि समय से पहले और समय से ज्यादा ना तो किसी को इस पृथ्वी पर कुछ मिला है और ना ही मिलेगा। इंसान लाख कोशिश कर ले, होगा वही जो ईश्वर ने लिख रखा है। कर्म करना केवल इंसान के हाथ में है परिणाम नहीं। इसलिए जो आपके पास है उसमें खुश रहिए और अपना कर्म करते रहिए एवं जो भी आपको मिला है उसका स्थान अपनी जिंदगी में सबसे ऊपर रखिए।

*****

हिंदी कार्यशाला का आयोजन

दिनांकः 03.09.2025 को कार्यालय में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें मुख्यालय एवं मंडल लेखापरीक्षा कार्यालयों से कुल 10 अधिकारी एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला में उपस्थित प्रतिभागियों को राजभाषा नीति, नियम एवं अधिनियम, राजभाषा हिंदी के आई.टी. टूल्स, कार्यालय से संबंधित हिंदी-अंग्रेजी शब्दावली एवं मासिक विवरणी प्रपत्र भरने से संबंधित विषय पर उपस्थित प्रतिभागियों को जानकारी प्रदान की गई एवं अभ्यास करवाया गया।

*****

राजभाषा हिन्दी के संबंध में महापुरूषों के महत्वपूर्ण सुविचार एवं सुक्तियाँ

1. भाषा ही राष्ट्र का जीवन है। - पुरुषोत्तमदास टंडन
2. हिंदी भाषा की उन्नति के बिना हमारी उन्नति असम्भव है। - गिरधर शर्मा
3. हिंदी जैसी सरल भाषा दूसरी नहीं है। - मौलाना हसरत मोहानी
4. राष्ट्रभाषा हिन्दी का किसी क्षेत्रीय भाषा से कोई संघर्ष नही है।- अनंद गोपाल शेवड़े
5. राष्ट्रीय एकता की कड़ी हिंदी ही जोड़ सकती है। - बालकृष्ण शर्मा "नवीन"
6. भारतीय एकता के लक्ष्य का साधन हिंदी भाषा का प्रचार है। - टी. माधवराव
7. भाषा विचार का परिधान है। - सैमुअल जानसन
8. हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है। - कमलापति त्रिपाठी
9. भारतीय साहित्य और संस्कृति को हिंदी की देन बड़ी महत्वपूर्ण है। - सम्पूर्णानंद
10. हिंदी, नागरी और राष्ट्रीयता अन्योन्याश्रित है। - नंददुलारे वाजपेयी
11. देशभाषा की उन्नति से ही देशोन्नति होती है। - सुधाकर
12. हिंदी उन सभी गुणों से अलंकृत है जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में सभासीन हो सकती है। - मैथिलीशरण गुप्त
13. भाषा, सभ्यता और देश की रक्षा करना सच्चा धर्म यज्ञ है। - ठाकुरदत्त शर्मा
14. भाषा और राष्ट्र में बड़ा घनिष्ट संबंध है। - (राजा) राधिकारमण प्रसाद सिंह
15. हिंदी भाषा की उन्नति का अर्थ है राष्ट्र और जाति की उन्नति। - रामवृक्ष बेनीपुरी
16. तलवार के बल से न कोई भाषा चलाई जा सकती है न मिटाई जा सकती है। - शिवपूजन सहाय
17. भाषा राष्ट्रीय शरीर की आत्मा है। - स्वामी भवानीदयाल सन्यासी
18. देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता स्वयं सिद्ध है। - महावीर प्रसाद द्विवेदी
19. हिंदी भाषा उस समुद्र जलराशि की तरह है जिसमें अनेक नदियाँ मिली हों। - वासुदेवशरण अग्रवाल
20. भाषा देश की एकता का प्रधान साधन है। - (आचार्य) चतुरसेन शास्त्री
21. सच्चा राष्ट्रीय साहित्य, राष्ट्रभाषा से उत्पन्न होता है। - वाल्टर चेनिंग
22. हिंदी प्रांतीय भाषा नहीं बल्कि वह अंतःप्रांतीय राष्ट्रीय भाषा है। - छविनाथ पांडेय
23. राष्ट्रभाषा राष्ट्रीयता का मुख्य अंश है। - श्रीमती सौ.चि.रमणम्मा देव
24. हिंदी हमारी भारतीय संस्कृति की वाणी ही तो है। - शांतानंद नाथ
25. हमारी राष्ट्रभाषा का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीयता का निर्माण है। - चंद्रबली पाण्डेय

महाप्रबंधक कार्यालय, पूर्वोत्तर रेलवे,

गोरखपुर-273012